VAAGDHARA

वातें वाग्धारा नी

जून,2020

VAAGDHARA

साथियो

प्रिय सम्मानिय साथियो आदिवासी प्यारे भाईयो-बहनो और बच्चो जय गुरु इस पत्रिका के माध्यम से दुसरी बार आपसे मिलने का मौका मिल रहा है। आशा है पहली पत्रिका में आपसे जुड़ने का प्रयास सफल हुआ होगा एवं कोरोना के कारण साथियो के साथ बैठको की कमी से जो जानकारी, की कमी रही होगी वह पूर्ण हुई होगी।

यह पत्रिका '' वातें वाग्धारा नी'' के माध्यम से आप तक पहुचने का कारण भी यही है कि यही कही चर्चा में भाग लेने का मौका नही मिल पाया हो और जब कभी किसी समस्या की स्थिति में स्थानीय समाधान पर सुझाव की आवश्यकता लगे तो पत्रिका मदद के रुप में सदैव आपके पास उपलब्ध रहे।

इसलिए इस क्रम में मैं आग्रह करना चाहुंगा कि इसे किसी एक माह की पत्रिका या एक दिन का अखबार न समझकर पत्रिका के माध्यम से उपलब्ध चर्चा को आप सदैव काम में लेते रहे और यह आपकी साथी बनकर आपके साथ रहे इस में दिये गए सुझाव, ज्ञान, कौशल की चर्चा कोई किताबीज्ञान न होकर स्थानीय स्तर पर यथार्थ रुप से काम आ सकने वाला ज्ञान है व सुझाव है तथा जो सफलता कि कहानी आपसे साझा कि गई है वो भी स्थानीय किसान भाईयो की कहानीया है।

आप भी इन्हीं कहानीयों की कड़ी में अपना स्थान बना सकते है। दुनिया के लिए उदाहरण बन सकते हो, परन्तु उसके लिए आवश्यक है अपने संसाधनो के साथ स्वयं व परिवार के पोषण खाद्य, सुरक्षा के लिए बाजार पर निर्भर न होकर पहले प्रकृति परिवार व समुदाय आधारित खेती जीवन चर्या निभाए न कि किसी बाहरी दुनिया जैसे बाजार या देखा देखी कि कृर्षि करना व पलायन से ज्यादा स्वयं के संसाधनो (अपने पशु खेत व पेड़ पौधे) पर प्रयास करना होता है और इसी के साथअपनी आने वाली पीढियो जिसमें अपने बच्चो की शिक्षा, स्वास्थ्य और पीढियो के लिए ज्ञान कौशल संरक्षण महत्वपूर्ण है। इसी के साथ ग्राम पंचायत और समाज में सक्रिय भागीदारी जिसमें केवल मात्र अधिकार ही नही बल्कि उचित भागीदारी का कर्तव्य भी होता है।

इसके डी में एक आदिवासी क्षैत्र परिवार के लिए वर्षा ऋतु कितनी महत्वपूर्ण है और खरीफ की खेती का क्या महत्व है वह समझना हमारे लिए आने वाले माह में बहुत महत्वपुर्ण है। आने वाले समय में प्रकृति का प्रसाद पानी (वर्षा जल) हमें उपलब्ध होता है। जिसे सहजना हमारे लिए वह हमारे आने वाली पीढियो के लिए बहुत महत्वपुर्ण है। इस प्रकृति में प्रकृति के प्रसाद(वर्षा ऋतु) को पाकर स्वतः ही उगने वाली वनस्पतिया उसके बीज पेड पौधो को सहजना हमारे लिए उतना ही आवश्यक है वही पोषण समृद्धि, सुरक्षा, संस्कृति, सम्मान का आधार है। इस आधार पर हमें आने वाले माह में उक्त विषयो को जरुर ध्यान मे रखते हुए अमल में लाना होगा है।

आपका

जयेश जोशी

वाग्धारा, कुपड़ा (बाँसवाड़ा)

खेड़ खातर ने पाणी जाता करम ने लावे ताणी

बुजुर्गों की ये बात सोलह आने सत्य बात है। खेड़ से उनका मतलब जुताई से था, किसान अपनी जमीन को जितना जोतेगा वो उतनी ही उपजाऊ बनेगी, उसी प्रकार खातर से उनका मतलब देसी खाद से था और पाणी माने सिंचाई जल से था। यदि इन तीन बातों पर यदि किसान ध्यान देगा तो वह अपनी रूठी किस्मत (जाता करम ने ताणी) को भी वापस ला सकता है। जब हम बात हमारे आदिवासी भाईयों की करते है। उनकी खेती करने के तरीकों और कृषि में उनकी प्राथमिकताओं का अध्ययन करते है तो पाते है कि उनके जीवन में खेती की सभी फालों में खरीफ की फसलों का विशेष महत्व है।

आदिवासी भाई खेड़ खातर और पाणी के महत्व को भलीभांति जानते हैं और उन्हीं परंपराओं का पालन करते हुए आज भी परंपरागत तरीके से खेती करते हुए अपने तथा अपने परिवार का पालन पोषण कर रहै है।

चूंकि जुताई और देसी खाद पर हमारा आदिवासी समाज आत्मनिर्भर हैं। परंतु जब पानी की बात आती है तो वहां वो थोड़ा परेशान है। उसके अपनी खेती के लिए वर्षाजल पर ही निर्भर रहता है। उसे खेती करनी है तो केवल बरसात के मौसम में ही करनी है। उसके अलावा दूसरे मौसम में उनके पास सिंचाई की सुविधाओं का अभाव है। जिससे वो खरीफ की फसल पर ही निर्भर रहता है। वह चाहकर भी रबी या जायद की फसल नहीं लव सकता है। इसलिए आदिवासी भाईयों के लिए खरीफ की फसल महत्वपूर्ण और प्राणतत्व है । वह अपनी खरीफ की फसल को इस प्रकार से लेता है कि उसके परिवार के पोषण की समस्या का समाधान हो जाये और उसके साथ साथ उनके जीवन में रुपयों की आवक भी बनी रहे जिससे हारी बीमारी विवाह वाजन, औसर मौसर पर या आकस्मिक दुर्घटना जोखिम का सामना वह सुगमतापूर्वक कर सके।

इसके लिए वह अपने खेतों में मिलवा खेती करता है।

वह एक ऐसी फसल करता है लंबे समय तक चलती है और उसके साथ काम समय में पककर तैयार होने वाली फसलें भी करता है। मुख्य रूप से आदिवासी भाई खरीफ में कपास की फसल लेते है पर उसके साथ साथ मक्का करते है। मक्का तीन महीनों में पककर तैयार हो जाती है जिससे परिवार के पोषण की समस्या मिट जाती है। अब रह जाती है कपाल की फसल जो लम्बे समय तक चलती है जिसे वह कुछ कुछ समय के अंतराल पर निकाल कर बाज़ार में बेचता रहता है जिससे उसे रोकड़ा मिलता रहता है और इस प्रकार उसके जीवन में कभी नकदी की समस्या नहीं आती ।

इन सभी बातों को मध्य नजर रखकर इस क्षेत्र में आदिवासी भाईयों के मध्य वर्षों तक काम करते हुए वागधारा संस्था ने गंभीरता से यह महसूस किया कि मिलवा खेती छोटे धान और बहुउद्देश्यीय पौधों की खेती करना बहुत जरूरी है, जिसके लिए इनकी उपयोगिता और लाभा को ध्यान में रखते हुए हम इन सभी पक्षों पर विस्तृत से जानकारी प्रदान कर रहे है | सबसे पहले

आज हम हमारे आदिवासी भाईयों को मिलवा या मिश्रित खेती के बारे में जानकारी रहे है जिसके आधार पर किसान भाई अपनी सुविधा और आवश्यकतानुसार मिश्रित खेती कर सकते है |

मिश्रित खेती पद्धति एक लाभ का सौदा

प्राचीन काल से मिश्रित खेती हमारी कृषि प्रणाली का एक अभिन्न अंग रही है। हमारे पूर्वजों ने इसकी संकल्पना मौसम की विपरीत परिस्थितियों में फसल सुरक्षा के दृष्टिकोण से की थी। सिन्धु घाटी की सभ्यता के एक प्रमुख स्थल कालीबंगा से प्राप्त जुताई के कूड़ों से पता चला है कि उस समय भी कई फसलों को एक साथ मिला कर खेती की जाती थी। मोहनजोदड़ो में गेहूं, जौ तथा चना की खेती एक साथ मिला कर की जाती थी। पतंजलि कृत ''भाष्य'' से भी मिलवां खेती के प्रमाण मिले हैं। इसमें एक स्थान पर दो धान्यों तथा उड़द या तिल मिला कर बोने का उल्लेख है। मिलिन्द पन्हों में तो पांच प्रकार की फसलों को एक साथ बोने का संकेत प्राप्त हुआ है। पूर्वी भारत में भी पांच प्रकार की फसलों को एक साथ बोने का संकेत प्राप्त हुआ है। पूर्वी भारत में मिलवां खेती का प्रचलन प्राचीनकाल से ही है, जिसे असाढ़ी खेती कहते हैं।

हमारे देश में कृषिगत क्षेत्र का लगभग 65 प्रतिशत भाग वर्षा पर आधारित है। प्राकृतिक आपदा जैसे अनावृष्टि के कारण-सूखा या अतिवृष्टि के कारण बाढ़ के फलस्वरूप बहुधा फसलें बिलकुल नष्ट हो जाती हैं। इस प्रकार की परिस्थिति में आर्थिक दृष्टिकोण से मिश्रित खेती सुरक्षा कवच का काम करती है। जब एक खेत में एक ही साथ दो-या-दो से अधिक फसलें उगाई जाती हैं तो यह संभावना होती है कि यदि कोई फसल मौसम की असामान्यता के कारण नष्ट हो जाए तब भी दूसरी या तीसरी फसल बच सकती है और इस प्रकार उस खेत से लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यह सुरक्षा केवल मिट्टी की नमी के दृष्टिकोण से ही नहीं वरन कीट एवं व्याधियों के प्रकोप की स्थिति में भी मिश्रित खेती के द्वारा प्राप्त होती है।

आजकल के युग में खेती योग्य भूमि पर जनसंख्या का बोझ दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। ऐसी परिस्थिति में मिश्रित खेती अपना कर किसान प्रति इकाई भूमि से अधिक उत्पादन ले सकते हैं। आवश्यकता केवल मानसिकता बदलने की है। आज के सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में मिश्रित खेती किसानों के लिए एक वरदान है। इसे अपनाने से अधिक आमदनी के साथ-साथ भूमि की उर्वराशक्ति भी बरकरार रहती है। साथ ही साथ रोग व्याधियों का प्रकोप भी कम हो जाता है।

मिश्रितखेती के फायदे

1. मिश्रित खेती करने से मरदा में नमी, पोषक तत्वों की आपूर्ति एवं फसल के बीच खली पड़ी जमीन का बेहतर उपयोग किया जा सकता है | 2. इस फसल पद्धति से धान्य (अनाज) वाली फसलो के साथ दलहनी फसलो को उगाकर मिट्टी की ताकत को बरक़रार रखा जा सकता है। 3. इस खेती पद्दति में एक सीधी खड़ी रहने वाली फसल के साथ दूसरी फेलने वाली फसल लगाने से खरपतवार का नियन्त्रण अपने-आप हो जाता है । 4. तेज वर्षा एवं तेज हवाओं के कारण होने वाले मिट्टी के कटाव को भी मिश्रित फसल पद्दति अपनाकर रोका जा सकता है । 5. मिश्रित खेती अपनाकर श्रम,पूंजी,पानी, खाद,दवाई इत्यादि की लागत को कम किया जा सकता है । 6. तेज हवा,तेज वर्षा,अन्य प्राकृतिक प्रकोप एवं जंगली जानवरों के द्वारा फसलो की सुरक्षा मिश्रित खेती के रूप में सुरक्षा फसलो को साथ में उगाकर किया जा सकता है । 7. मिश्रित खेती अपनाकर उत्पादन में वर्धि, दो फसलो के समय अन्तराल को कम किया जा सकता है इसलिए इसे डेढ / दुनीफसली भी कहा जाता है|

इस प्रकार यह कह सकते है कि खेती में बढती लागत और मृदा स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए मिश्रित खेती किसानो की आमदनी दुगुना करने में मिल का पत्थर साबित हो सकती है वागड़ में खरीफ कीखेती ज्यादातर बारिश पर आधारित होती है| लोग सिंचाई की कमी की पूर्ति बारिश के पानी से पूरी करते है और बाकि रबी की फसल की बुवाई बची हुई नमी से पूरी की जाती है| क्यूंकि यहाँ की मिट्टी काली / लाल दोमट मिट्टी है और भूमि की गहराई काफी कम है जिससे की मिट्टी में नमी ज्यादा देर तक नहीं ढहर पाती है इसीलिए पानी का सदुपयोग कर सही समय व सही तरीके से बीज की बुवाई करना बहुत आवश्यक है | इसके साथ ही मिट्टी का नियोजन करना जरुरी हैजिससे वो ज्यादा से ज्यादा समय तक नमी बना कर रखे |

खरीफ की मुख्यत फसल जो वागड़ धरती पर बोई जाती है उसमे मक्का, उड़द, मूंग,(हार), मूंगफली,अरहर और कुछ-कुछ जगहों पर छोटे अनाज व तिलहनी फसल भी की जाती है| और साथ ही नगदी फसल के रूप में मुख्य कपास और सोयाबीन की जाती है| वाग्धारा हमेशा मिश्रित खेती व बहुमंजलिया खेती को भी बढ़ावा देता इसलिए समुदाय के साथ समय समय पर प्रशिक्षण आयोजित कर परिवार के समेकित खेती तंत्र को मजबूती प्रदान करने के लिए या विलुप्त होती खेती पद्दति, बीज आदि को पुनर्जिवित करने के लिए इस वर्ष खरीफ की फसल हेतु 30000 किसानों को देशी मक्का साठी , उड़द, तिल, बारामासी अरहर , चावला,औषदी वर्ग के पौधों के बीज, बहु उद्देशीय पौधों के बीज ,बहु ऊद्देशीय एवं फलदार पौधे , सब्जियों के बीज , देशी साल / चावल(जीरा,जलजीरा,पाथरिया, नहेड़ी, भरी साल , कोलम्बो , काली कुमद , अजुड़ी) , छोटे अनाज जैसे माल , कुरी , बटी, कोदरा, कांग, चिना आदि किसानों को उपलब्ध करवाया है ताकि क्षेत्र में फसल की विविधता को कायम रखा जा सके एवं अपनी पहचान खो चुकी फसलो को एक बार पुनः स्थापित किया जा सके | **मिश्रित खेती मक्का + उरद/मूंग –** कई किसान मक्का और मूंग/उड़द की फसल का चयन साथ में करते हैं| इससे किसान को दाल के लिए उड़द व रोटी के लिए मक्के की पूर्ति हो जाती हैं| कई किसान दो-चार कतार मक्के की बुवाई के बाद दो-तीन कतार मूंग या उड़द की भी करते है| इससे जमीन की उर्वरकता भी बढती है और दोनों फसलो के जड़ की गहराई और आकार की वजह से भूमि का भी अच्छा नियोजन होता हैं| मक्का + उड़द + तिल – कई किसान इन फसलों के साथ तिल की भी खेती करता हैं| स्थानीय लोग आमतौर पर तिल का इस्तेमाल ठण्ड के दिनों में खाने के लिए करते है जिससे उनका शरीर गर्म रह सके व इसका तेल निकाल कर खाने में इस्तेमाल करते हैं| कुछ किसान तिल को नगदी फसल की तरह भी करते है और बाज़ार में बेच कर कुछ पैसे कमा लेते हैं| **मक्का + तुअर –** यह किसानो को दो फसल एक साथ समय के अंतराल में लेनेकी प्रथा को अपनाते हुए मिश्रित खेती के रूप में लेते है जिसमे मक्का और तुअर दोनों की बुवाई एक समय पे एक ही खेत में की जाती है| मक्का तीन-चार माह में पक जाता है जबकि तूअर और दो - तीन माह लगा कर छह महीने में पकती है| इससे किसान को खेत की दूसरी बार रबी मौसम में जुताई भी नहीं करनी पड़ती है और जमीन की जुताई व बीज की बुवाई में फिर से समय भी नही लगाना पडता| इसके साथ ही यह हमारेखेत के लिए भी अच्छी होती है क्युकि तुअर की पत्तिया खेत में गल कर खाद बनाती है एवं वायुमंडल से नाइट्रोजन लेकर खेत में जमाती है इससे मृदा की उर्वरक क्षमता बढ़ती है | जमीन खाली नहीं रहती जिससे मिट्टी कटाव नहीं होता और दलहनी फसल को अपने खेती प्रणाली में सम्मिलित करने से जमीन में नाइट्रोजन की मात्रा भी बनी रहती है और मिट्टी स्वस्थ रहती है| मिश्रित खेती में अनाज के साथ दलहन करना मृदा के लिए संजीविनी के सामान है |

मक्का एवं उड़द / मूंग की पंक्तिवार खेती के फायदे

• ढलान वाली जमीन में दालो जैसे उड़द या मूंग की खेती मक्का के साथ उपयुत रहती है • मक्का के साथ दालो की खेती करने से जमीन की उर्वरा शक्ति में सुधार होता है • प्रति बीघा भूमि में मिश्रित फसल में एक फसल से ज्यादा मुनाफा होता है • मौसम की अनिश्चितता की स्तिथि में एक फसल में लाभ मिल सकता है • मक्का के साथ दालो बोने से फड़का रोग व अन्य रोगों से बचाव होता है मक्का-दालो की मिश्रित खेती प्रणालियों विशेष रूप से छोटी जोत वाले किसानो के लिए उपयुक्त है। दालो के लगातार बोने से 25प्रतिशत तक मक्का की पैदावार बढ़ा सकते हैं। संरक्षणकृषि प्रणाली के तहत दालो के साथमक्का बोने से एक फसल प्रणाली से 33प्रतिशत अधिक अनाज पैदा करता है। इसके अलावा कुछ किसान कपास के साथ साथ तुंवर, उड़द और सोयाबीन भी करते हैं। साथ साथ खरीफ के मौसम में अपने घरों के आस पास बेल वाली सब्जियां भी उगा लेते है जिसमें गिलकी, तुरई, करेला और अन्य कई प्रकार की औषधीय वनस्पतियां भी उगा लेते हैं साथ ही वो धान जो धीरे धीरे हमारे जन जीवन से लुप्त प्रायः होते जा रहे वो हमारे आदिवासी भाईयों के खान पान का प्रमुख अंग है। जिनके कारण उनका स्वास्थ्य अच्छा है उनकी दिनचर्या में उनके खान पान में ऐसे कई फल, सब्जियां, शाक भाजी और धान है जो खरीफ में ही पैदा होते है।

मक्का

• मौसम – मक्का आमतौर पे थोड़ी गर्मी और नमी वाली फसल है जिसे भरपूर सूरज की रोशिनी चाहिये| ये मौसम फसल के लिए अच्छा माना जाता है| ये 60-110 मिमी में अच्छी फसल देती है|

• मिट्टी – मक्का हर तरह की मिट्टी में फसल देती है पर मध्यम से हल्की भारी जैविक खड से भरपूर्ण मिट्टी मक्का के लिए सबसे उचित मिट्टी मानी जाती है| मिट्टी में नमी जरुरी होती है पर पानी का ठहराव अच्छा नहीं होता इस फसल के लिए|

• खेत की तैयारी -देशी हल से खेत की जुताई कर पाटे से मिट्टी के ढेले को तोड़कर खेत तैयार किये जाते है| अगर खेत में नमी कम हो तो एक जुताई कर खेत तैयार करनी चाहिए और अगर नमी ज्यादा हो तो 60 सेमी. पर लकीरे बना कर खेत तैयार कर सकते हैं| इससे खेत में जमा पानी का आसानी से निकास हो जाता है और पौधों को बढ़ने के लिए पर्याप्त जगह भी मिल जाती है|

• बुवाई का समय – खरीफ में मक्का की बुवाई बारिश के आधार पर मई माह से लेकर जून माह में की जाती है| मक्का की बुवाई रबी के मौसम में भी खरीफ के मौसम से अच्छा होता है| रबी के मौसम में बुवाई का समय अवश्यकतानुसार नमी को देखते हुए होता है|

• बीज दर – 20 किग्रा बीज प्रति हेक्टेयर और 8 किग्रा बीज प्रति एकड के हिसाब से पर्याप्त होता है|

• अंतराल – अधिक उपज पाने के लिए हल के पीछे 60 सेमी. दूरी की कतारों में और बीज से बीज 20-25 सेमी की दूरी बना कर बोना चाहिए जिससे 24000 से 30000 पौधे प्रति एकड मिल सके| मक्के के बीज को 3-5 सेमी गहरा बोना चाहिए ताकि अंकुरण सही से हो सके|

• और यदि बुवाई ढलाऊ भूमि पे करनी हो तो वहां पर कतारों को ठलान की विपरीत दिशा में रखकर बुवाई करनी चाहिए|

• जैविक खाद – 3.2-4 टन/एकड गोबर की खाद को हल चलाते समय खेत में डाले, वर्मीखाद 1.6-2 टन/एकड खेत में मिलाए| इसके पश्चात 1/3 भाग वर्मीखाद को जमीन की तैयारी के समय और 2/3 भाग बीज बोने के समय डाले| जमीन में सूक्ष्म जीवों की संख्या की बढोतरी के लिए और फसल को समय से पोषक तत्वों के मिलने हेतु जीवामृत 200 लीटर/एकड की दर से खेत में प्रयोग करे| फसल की अच्छी बढोतरी के लिए वर्मी का पानी और गौमूत्र का स्प्रे 7-10 दिनों के अंतराल पर भुट्टो में दाने आने तक करे|

आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में दिन प्रतिदिन जंगल एवं पेड़ पौधे की कटाई हो रही है जंगल खत्म होता दिखाई दे रहा है आज से 3 दशक पहले जंगल में सभी प्रकार के परम्परागत फल जैसे आम , टिमरू, जामुन, सीताफल , बेर , रामफल, देखने को एवं खाने को मिलता था, लेकिन आज ये सभी पौधे धीरे-धीरे विलूप्त होता दिखाई दे रहे है । देशी आम के बांसवाडा में काफी प्रकार के थे लेकिन नई पीड़ी ने वापस उसको जिन्दा रखने का प्रयास नहीं किया। हो सकता है अपना भी इसी प्रकार का हाल रहा था। अभी से नहीं जागे तो आगे की पीढी शायद यह परम्परागत फल के पेड़ो के नाम तक भूल जायेगी ।

हमारी आदिवासी संस्कृति को टिकाऊ रखने के लिए वापस हमकों इन परम्परागत फलों को बढावा देकर अपने ही घर में आम,अमरूद, नीम्बु, पपीता, जामुन,सीताफल, बैर, टिमरू, केला,जैसे पेड़-पौधे यही है तो हमको कही भी बाजार से लेन की आवश्यकता नही है । सभी प्रकार के तत्व इन पौधों के फलो में है । तो अब हम संकल्प लेंगे कि सभी फल वाले पौधे एवं पशु (जानवरों) के लिए पौधे अपने घर में लगायेंगे ,और प्रकृति का साथ तो देंगे ही साथ ही साथ घर में भी पैसो की बचत होगी । बीमारिया कम होंगी , पोषण की कमी नही होंगी , पशुओं के लिए चारा उपलब्ध होगा, जलाऊ लकड़ियाँ उपलब्ध होंगी , इन सभी के लाभ के लिए इस वर्ष सभी तरह के पेड़ पौधे लगाने का संकल्प लेना है । **क्यों जरुरी:-** परम्परागत फल जैसे आम,अमरुद,निम्बू,सीताफल,टिमरू,बेर ये सभी बाजार से आवश्यकता के अनुसार सभी समुदाय के लोग बाजार से नहीं नहीं ला सकते है ।लेकिन अपने खेत में होगा तो , पहले तो वह बिलकुल जैविक होगा , उस पर किसी भी प्रकार का रसायन या जहरीली दवाई का छिडकाव वाला फल नहीं होगा । दूसरा जब परिवार के पोषण की बात करते है तो इतनी मात्र में रोज फल लाकर खाना एक सामान्य परिवार के लिए सम्भव नही है । अपने खेत में या जंगल में होगा तो भरपूर मात्रा में उसका लाभ ले सकते है । दूसरी खास बात लोगो के फल के साथ-साथ पशु(जानवर) के लिए चारे वाले पेड़-पौधे जो जंगल में होते थे और जिनसे पौधे की टहनी की पत्ती से गर्मी के दिनों में हरा चारा मिलता था , इस तरह के पेड़ पौधे भी लुप्त हो चुके है । पशुओं के लिए भी सब बुल,खेजड़ी, सहजन,नीम, शहतुत, केले के पत्ते , बाँस, बबुल अपने खेत की मेड पर लगाने से घर में दोहरा लाभ होता है । जैसे पशुओं को उसके पत्ते का पाला मिल जायेगा और डंठल (टहनी) सूखने के बाद जलावन के रूप में काम आएगी । तो घर के सदस्य को पशुओं के लिए हरा चारा बचत के साथ जलावन भी उसी के खेत से उपलब्ध हो जायेगा । शर्त यह है कि हर साल इस तरह के पेड़ पौधे अपनी खेत की मेड पर लगाना जरुरी है । तभी आपके घर में दुग्ध उत्पादन में वृद्धि हो सकती है और बकरी जैसे छोटे जानवर के लिए तो लगभग 80% चारा जंगल के पेड़ पौधे ही होते है । यदि आपने इस तरह के पौधे को जीवंत नहीं रखा तो, धीरे - धीरे बकरी जैसे जानवर को पालना भारी हो सकता है ।जल की तरह ही पेड़-पौधे भी हमारे जीवन का अमूल्य अंग है। इसके महत्व को समझते है, लेकिन इसकी रक्षा के लिए कोई प्रयास नहीं करता।पशुओं को पेड़-पौधे की पत्तियाँ खास करके इन पौधे से ज्यादा लाभ मिलता है। सब बुल,खेजड़ी, सहजन,नीम, शहतुत, केले के पत्ते , बाँस, बबुल यह कम पानी में भी पनपने वाले पौधे हैं। **आम : –** वर्ष से वागड़ शेत्र में जाना जाता है 150 से 200 फिट के उचाई वाले वागड़ के आम अपने आप काफी अलग अलग स्वाद से भरा हुवा है | आम अत्यंत उपयोगी ,दीर्घ जीवी , सघन तथा विशाल वृक्ष है आम का इतिहास अत्यंत प्राचीन है वेसे देखे जाते है तो आम की काफी प्रजातीया है | लेकिन यहाँ का देशी आम का स्वाद अलग ही है | आम को आर्थिक द्रष्टि से देखे तो एक परिवार में यही आम 35 -40 पोधे अनु उपजाऊ जमी पर लगाते है तो 5 वर्ष में उसको 40-50 हजार का मुनाफा मिलता है और अभी इस तरह के परिवार है जो मुनाफा रहे है तो आम आर्थिक दृष्टि से काफी उपयोगी है | आम को कमाई के साथ साथ भोजन में भी उसका उपयोग करेने से अपने स्वस्थ के लिए भी काफी उपयोगी है वेसे 12 माह से सिर्फ अप्रैल ,मई, जून माह ही खाने का सीजन आता है आम में मौजूद एंटीओक्सीजन कोलोन, उकेनिया और प्रोस्टेट होने से केंसर जैसी बीमारी से बचाता है आम में बिटामिन ए भरपूर मात्रा में होतो है जो आखो के लिए वरदान है| **सुहानजंना (ड्रमस्टिक) –** महजन एक बहुत ही उपयोगी पौधा हे जो कि गरम देशों में पाया जाता है। यह एक औषधीय मूल्य वाला तथा पोषक तत्वों युक्त पौधा है। यह खनिज के साथ साथ प्रोटीन, विटामिन, वीटा केरोटिनए अमिनो एसिड और विभिन्न फिनॉलिक यौगिकों का अच्छा स्त्रोत है। इसकी पत्तियों में प्रोटीन 21.8% एसीड डीटरजेंट रेशा 288% न्यूट्रल डीटरजेंट रेशा 30.8% होतो है छोटे पशु जैसे बकरी, भेड़ के लिये भोजन को मोरिंगा पत्तियाँ काफी उपयोगी।

शहतूत – किसानों को शहतुत के बारे में अच्छी जानकारी होने से, पशुओं को खिलाने के लिए लम्बे समय से इसका उपयोग किया जा रहा है इसकी पत्तियों का प्रयोग पशुओं को खिलाने के लिए किया जाता है। इसे घास के साथ, कृषि क्षेत्र में सड़क के किनारे नहरों के किनारे या बहुत कम भूमि में उगाया जा सकता है। इसका प्रोटीन 26% कुल पाचकीय तत्व 50% होता है। इसमें पचने की क्षमता पत्तियों की तने की, छाव की और पूर्ण पौधे की क्रमशः 70-90%, 37-44%, 60% और 58-79% होती है। प्रायः ऐसा देखा गया है कि यह दुग्ध उत्पादन को बढ़ाकर उत्पादन की लागत को कम करता है।

कचनार – कचनार एक फलीदार वृक्ष है फलीदार वृक्ष होने से उसकी जड़ में नाइट्रोजन होता है इससे जमीन में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ती है कचनार एक सुन्दर फूलो वाला वृक्ष है उसके फुल की चटनी बनती है जो बढ़िया स्वादिष्ट बनती है कचनार के फुल और कालिया वात रोग, जोड़ो के दर्द के लिए विशेष लाभकारी एवं कचनार के नरम फली की सब्जी बनाई जाती है साथ ही उसके फूलो का रायता बनाया जाता है जो खाने में स्वादिष्ट होता ही है साथ ही इससे रक्तपित, फोड़े फुंसियो की समस्या भी ठीक होती है |

अमलतास – अमलतास के पेड़ को आपने अनेक स्थान पर देखा होगा| यह पेड़ सुबह सडको के किनारे या बाग़ बगीचे खेतो की मेड पर या जंगलो में दिखाई देते है इसमें पीले फुल होते है | आयुर्वेद के अनुसार बुखार, पेट सम्बंधित रोग, त्वचा रोग, खांसी, टी.बी. और ह्रदय रोग आदि में अमलतास से फायदे होते है | अमलतास का पेड़ फलीदार पेड़ होने से उसकी जड़ो में नाइट्रोजन है जो जमीन को उपजाऊ बनाता है | **बहेड़ा –** बहेड़ा का पेड़ 18 से 30 मीटर तक ऊँचा और फैला हुआ व लम्बा होता है बहेड़ा की छाल 2 से.मी. मोटी होती है इसकी पेड़ पहाड़ो और ऊँची भूमि में अधिक मात्रा में पाए जाते है इसकी छाया स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होती है इसके पत्ते बरगद के पेड़ के समान होते है इसकी छाल का उपयोग ओषधि के रूप किया जाता है |बहेड़ा कीड़ो मारने वाली ओषधि है बहेड़ा के फल की भींगी मोतियाबिंद को दूर कराती है बहेड़ा की छाल खून की कमी, पीलिया और सफ़ेद कुष्ठ रोग में लाभदायक है बहेड़ा की इमारती लकड़ी घर बनाने में काफी काम आती है और कृषि ओजार बनाने के लिए उपयोग किया जाता है|

सीताफल – अपने वागड़ क्षेत्र में सीताफल काफी मात्रा में होता है खासकरके सीताफल बलुई दोमट, पथरीली चट्टानी भूमि जहां पानी निकास अच्छा होता है वहा सीताफल अच्छी तरह से होते है एवं फल भी अच्छा होटा है सीताफल ओषधि महत्व का पोधा है इसकी पत्तिया ह्रदयरोग मेव टोनिक का कार्य करती है सीताफल का उपयोग कफ दोष को ठीक करने के लिए खून की मात्रा को बढ़ाने के लिए एवं इसके अलावा इनका प्रयोग अन्य रोगों में भी होता है | आर्थिक रूप से सीताफल के फल से काफी मुनाफा एवं पोधे से कम से कम 50kg फल निकलते है यदि उसकी खेती करते है तो एक एकड़ से 8 से 10 टन फल निकलता है ज्यादा नही लेकिन किसान अपने खेत की चारो तरफ बोर्डर पर सीताफल लगा दे तो प्रतिवर्ष 40 से 50 पोधो से 50 से 60 हजार रुपये की आमदनी ले सकता है |**टिमरू (तेंदु पत्ता) –** प्राचीन समय से टिमरू का पोधा अपने जंगलो में पाया जाता है टिमरू को लोकल बीढ़ी पत्ता कहा जाता है टिमरू के फल काफी पोष्टिक होते इसको चीकू की तरह देशी चीकू कहा जाता है टिमरू रक्त में लाल रक्त कणिकाओ को तेजी से बढाता है टिमरू में सभी प्रकार के मिनरल्स और तत्व पाए जाते है इसके सेवन से उच्च रक्तचाप वालो के लिए भी फायदेमंद है भोजन को कंट्रोल करने में सहायक है इसका सुबह सेवन करने से पाचन शक्ति को बढ़ावा देता है साथ में यह फल रोगप्रतिरोधक शक्ति को बढ़ावा देते है | टिमरू का आर्थिक रूप से बहुत लाभ है उसके पत्ते बड़ी बनाने में काम आते है एवं टिमरू की लकड़ी इमारती लकड़ी के रूप घर के फर्नीचर बनाने में उपयोगी होती होती है टिमरू के फल की बिक्री होती है एवं उसको खाने से भी काफी लाभ होता है | **कटहल –** कटहल के पोधे अपने वागड़ क्षेत्र में कम दिखाई देते है लेकिन यह लगभग सभी प्रकार की भूमि में पनप जाते है लेकिन अच्छी जल निकास की व्यवस्था वाली गहरी दोमट मिटटी बढ़वार एवं पैदावार के लिए उपयुक्त होती है माध्यम से अधिक वर्षा एवं गर्म जलवायु वाले क्षेत्र कटहल की खेती के लिए उपयुक्त होते है वैसे अपने घर में ज्यादा नहीं 3 से 4 पोधे कटहल के होने चाहिए जिससे काफी मात्रा में आमदनी ले सकते है कटहल के पोधो के बीज से 7 – 8 वर्ष में फल प्रारम्भ होता है जबकि कलमी पोधे में 4 से 5 वर्षो में फल मिलने लगता है पेड का 12 वर्ष की उम्र तक फल कम होता है इसके बाद प्रति पेड़ 100 से 125 तक फल प्राप्त होता है| **जाम्बुन –** जाम्बुन एक सदाबहार वृक्ष है इसकी ग्रोथ फ़ास्ट होती है अपने जंगलो की पहाडीयों में काफी मात्रा में इसके वृक्ष पाए जाते है प्रकृति में यह अम्लीय और कसेला होता है व स्वाद में मीठा होता है अम्लीय प्रक्रति के कारण सामान्यतह इसे नमक के साथ खाया जाता है जाम्बुन में ग्लूकोज और फ्रक्टोज दो मुख्य स्त्रोत होते है इसमें कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन और केल्शियम की अधिकता होती है 100 ग्राम में 2 ग्राम आयरन की मात्रा होती है जाम्बुन से किसान अच्छी आमदनी ले सकता है इसके एक पेड़ से 80 से 100कि.ग्रा. फल मिलता है इसके वृक्ष को खेत के चारो तरफ लगाने से बढ़िया उत्पादन मिल सकता है यदि 5 पेड़ जाम्बुन के है तो 15 से 20 हजार रुपये उत्पादन ले सकते है |

शेष पृष्ठ 2 पर...

हल्दी

हल्दी को आमतौर पर हमारे देश में एक मसाला माना जाता है, लेकिन हल्दी में प्रोटीन, विटामिन ए, कार्बोहाईड्रेट और मिनरल्स की प्रचुर मात्रा के अलावा एंटी-ऑक्सीडेंट,एंटी-फंगल और एंटीसेप्टिक तत्वों वाले कई सारे ऐसे औषधीय गुण पाए जाते हैं। जिसकी वजह से हल्दी का उपयोग न सिर्फ हमें कैंसर,सर्दी -खांसी जैसी गंभीर बीमारियों से बचाती है और सेहतमंद बनाए रखने में मदद करती है, बल्कि हमारी खूबसूरती को बढ़ाने में भी बेहद कारगर साबित होती है। **जलवायु एवं भूमि** –हल्दी के लिए उष्ण एवं तर जलवायु की आवश्कता होती हे जो वागड़ आँचल के हिसाब से उपर्युक्त है .हल्दी के लिए दोमट ,बलुई एवं मटियार दोमट मिटटी सबसे बढ़िया मानी जाती हे.इसी के साथ जल निकास प्रबन्धन व उपलब्धता अच्छी हो वहा पर पैदावार भी प्रचुर होता हे. **वागड़ में अच्छा उत्पादन देने वाली किस्म–** 1. सुगंधम– इसका ललाई युक्त पिला होता है.व यह 210 दिन में पक के तैयार हो जाता है 2. रोमा - यह अधिक पैदावार एवं बीमारियों से कम प्रभावित होने वाली किस्म हे. यह किस्म 250 दिन में पक के तेयार हो जाती है. 3. सुगना - इसका प्रकन्द मोटा व स्थूल होता हे. साथ ही यह बीमारियों से कम प्रभावित होता है.यह अगेती किस्म हैं 190 दिन में पक जाती है हल्दी पकने की अवधि 300-350 दिन की होती है| खेत की तैयारी –अगर खेत की जुताई 2-3 बार हो जाए तो इसे उपयुक्त माना जाता है. तथा अंतिम जुताई से पहले 50-60 किलोग्राम देसी खाद डालना उपयुक्त माना जाता है| बुवाई का समय एवं विधि –वैसे हल्दी की बुवाई मई-जुलाई तक की जा सकती हे परन्तु जहा सिंचाई के साधन हो वहा इसका उपयुक्त समय मई माना गया है. इसको तीन प्रकार से लगाया जा सकता हे – 1.समतल भूमि में 2. क्यारियो में 3.डोलियों पर. जहा तक बात वागड़ अंचल की जावे तो यहां पर डोलियों पर हल्दी उगाना श्रेष्ट माना गया हे.साथ की इसकी बुवाई सदैव पंक्तिंवार करनी चाहिए। **विधि–** 1. पंक्ति से पंक्ति – 30-40 सेमी. 2. कंद से कंद - 20-25 सेमी. 3. गहराई – 4 सेमी. **ध्यान रखने योग्य** –कंद की रोपाई के समय कंद की आंख हमेशा ऊपर की तरफ रखे एवं एक कंद का भार कम से कम 20-22 ग्राम रहना चाहिए .बीज उपचार–आधा लीटर पानी में 100 ग्राम गुड घोलकर उबाले| घोल ठंडा हो जाने पर २०० ग्राम जीवाणु खाद को इसमें मिलाए| इसके बाद घोल को 10-15 किलो बीज के ढेर पर धीरे-धीरे डालकर हांथो से मिलाए जिससे की अच्छी तरह और समान रूप से बीजों पे चिपक जाए| इस प्रकार तैयार उपचारित बीज को छाया में सुखाकर तुरंत बुवाई कर दे| • फरवरी माह में जब ऊपर के पत्ते सूखने लगते है तब जड़ से पत्तों क काट दिया जाता है| • इसके 1 माह के बाद हल्दी को निकाल लिया जाता है|

धान (पातरीया/हार)

मौसम – धान वर्षा आधारित फसल है जो पुरे भारतवर्ष में की जाती यह हर तरह की भरी मिट्टी के लिए उचित है जिसमे ज्यादा पानी पकड़ के रखने की क्षमता रखती है| अच्छी पैदावार के लिए 20-35 डिग्री तक का तापमान भी उचित होता है| **मिट्टी** – धान ज्यादा पानी वाली फसल है जिसे चिकनी और ज्यादा पानी पकड़ के रखने वाली मिट्टी में अच्छी पैदावार देती है| ताकि कुछ किस्मे ऐसे भी होती है जो कम पानी में ककिली और पथरीली जगहों में भी अच्छी फसल लाती है| खेत की तैयारी– 2-3 जुताई के बाद खेतों में पानी भर कर गेडाई करनी है जिससे खेत की मिट्टी की ढेले टूट जाए और मिट्टी ज्यादा से ज्यादा पानी ग्रहण कर सके| **बुवाई का समय** – • बीज की बुवाई / बीज छींट कर बुवाई – यह बीज गेडी या बिना गेडी हुई खेत में नमी को देखते हुए सीधे बो दी जाती है|• रोप द्वारा रोपाई - बारिश के शुरुआत के साथ रोप तैयार कर दी जाती है| जमीन से 6 इंच ऊची क्यारी तैयार कर रोप तैयार की जाती है और २१-25 दिनों के बाद गुडाई की हुई खेत में रोप दी जाती है| **बीज दर** – 6-8 किग्रा प्रति एकड के हिसाब से धन का बीज लिया जाता है| **अंतराल–** 25 सेमी दो पंक्ति की दूरी व दो रोप के बीज की दूरी 25 सेमी रखी जाए| **जैविक खाद** – 1.25 टन प्रति एकड के हिसाब से उकडा खाद का इस्तेमाल करनी हैं|**सिंचाई** – क्योंकि यह एक जलप्रिय फसल है इसलिए खेत का अच्छा से समतलीय करण करना जरुरी होता है ताकि अधिक जल का निकास हो सके| इसके साथ ही खेत मे हमेशा 2-5 सेमी पानी रखना चाहिए| **खरपतवार नियंत्रण** – खरपतवार की समस्या गुडाई की हुई खेत में कम होती है जबकि बिना गुडाई हुई खेत मझे यह समस्या ज्यादा देखी जाती है| इसके लिए हर 20-25 दिनों में हाथों से या कोनोवीडर से खरपतवार हटानी चाहिए| **आम रोग व कीट** – झुलसा रोग, जीवाणु झुलसा, खैरा रोग, पादप रोग मुख्य रोग है| इसके अलावा तना छेदक, गुंदी कीट व पर्ण फुदका आम कीट हैं| इन सबके लिए देशपर्णी और नीमास्त्र के उपयोग से इन कीट पर काफी हड तक नियन्त्रण पाया जा सकता है| इसके अलावा आजकल सभी जगह कृषि वानिकी की चर्चा जोरो पर है | किसान भाई को अपने जीवन यापन के लिए कई वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है जिसमे प्रमुख रूप से पशुओं का चारा, इमारती लकड़ी, इंधन, फल-फुल | इस सब की पूर्ति के लिए आदिवासी किसान वर्षों से परम्परागत रूप से बहुउद्देशीय पौधों को उगाता जा रहा है जो उसकी विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करते है जिसे आज कृषि वानिकी का प्रमुख अंग माना जा रहा है | आईये जानते है हम हमारे यहाँ किस प्रकार बहुउद्देश्यीय पौधों को लगा सकते हैं | इस प्रकार हम जान सकते है कि किस प्रकार हमारे आदिवासी भाईयों के लिए खरीफ की फसल बहुत महत्वपूर्ण है आज जो इस कोरोना संकटकाल में हमारे आदीवासी भाई जिस जीवटता के साथ मुकाबला कर रहे है। इस महामारी से कोसो दूर है उसके मूल में उनका खान पान उनकी दिनचर्या और उनकी जीवन शैली प्रमुख है। वाग्धारा संस्था का ये विनम्र प्रयास है की आदिवासी क्षेत्र की कृषि की समस्याओं का समाधान करके पुनः इनको जीवन की मुख्यधरा में लाया जाये जिससे ये प्रकृति के रक्षक प्रकृति को संरक्षित करके स्वयम स्वस्थ एवं प्रसन्न रहकर मानवता की सेवा का स्तुत्य कार्य निरंतर कर सके ।

बाल संरक्षण में ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति की भूमिका

प्रिय पाठकों जैसा की वातें वाग्धारा की पत्रिका के प्रथम अंक में आपने समझा की किस प्रकार सुरक्षित बचपन ही हमारे बच्चों को संरक्षित भविष्य दिलवा सकता है, और इसके लिए परिवार स्तर पर हमकों किन किन बातों का ध्यान रखना है। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए इस अंक में हम जानेंगे की हमारे बच्चों के संरक्षण के लिए ग्राम स्तर पर किस समिति की जिम्मेदारी निर्धारित की गयी है और बाल संरक्षण में इस समिति की क्या भूमिका है।

जैसा की आप सबको पता है की आपके गाँव में बाल अधिकारों के संरक्षण के लिए ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति का गठन किया गया है, जिसकी मुख्य जिम्मेदारी है की पुरे ग्राम के 18 वर्ष तक के आयु के बच्चों को एक सुरक्षित बचपन प्रदान करना ताकि आने वाले समय में हमारा गाँव बाल मित्र गाँव बन सके। इसी उद्देश्य को लेकर यह समिति कार्यशील है और नियमित बैठक के माध्यम से बाल संरक्षण के लिए कार्य भी कर रही है। अभी वर्तमान में कोरोना महामारी के कारण हमारे गाँवो में बच्चों की परिस्थिति सही नहीं है, जैसे कुछ बच्चों के पास खाने की सामग्री की कमी है तो कुछ बच्चों के परिवारों के पास खर्चा चलाने के लिए पैसा नहीं है, जो बच्चें पालनहार योजना से लाभान्वित है उनको भुगतान हर माह नहीं हो रहा है, काफी सारे बच्चें अपने परिवारों के साथ पलायन से वापस गाँव में लौटे है इत्यादि। इन सभी परिस्थितियों को ध्यान में रखकर आपके गाँव की ग्राम विकास एवं बाल अधिकार के पदाधिकारी पंचायत व

वाग्धारा के सहयोग से इन बच्चों की सूची तैयार कर खाद्य सामग्री दिलवाने का नियमित प्रयास कर रहे है, ताकि इनका पोषण संरक्षित हो सके।

इस कड़ी में जैसा की आप सभी जानते है की अप्रैल से जुलाई माह का समय ऐसा समय होता है जब परिवार स्तर पर भोजन की थाली में केवल अनाज ही होता है व सब्जियों की कमी होती है जिससे हमको पर्याप्त पोषण नहीं मिल पाता है, जिसका सबसे ज्यादा असर हमारे बच्चों पर पड़ता है और अगस्त से सितम्बर माह का समय ऐसा होगा जब परिवार को अनाज की कमी का भी सामना करना पड़ता हैं, भोजन थाली में पर्याप्त पोषण की कमी से बच्चों के पोषण पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जिससे हमारे बच्चें कुपोषण का शिकार हो जाते है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति के सदस्यों की जिम्मेदारी बनती है की फल वार सभी अपनी जिम्मेदारी तय करते हुए गाँव के समस्त 6माह से 60माह के बच्चों में कुपोषण की पहचान करने के लिए सर्वे करे और फिर उक्त सर्वे में जितने बच्चें कुपोषित व अतिकुपोषित निकल कर आये हैं उनकी संख्या के आधार पर गाँव स्तर पर 15दिवसीय पोषण शिविर के आयोजन की कार्ययोजना का निर्माण सक्षम समुह की पदाधिकारियों व चिन्हित हुए बच्चों की माताओं के साथ मिलकर करेंगे।

बच्चों में कुपोषण की पहचान के लिये सर्वे के तहत समुदाय संदर्भ व्यक्ति (सी.आर.पी.) ग्राम विकास बाल अधिकार समिति के सदस्यों को इस कार्य के सही किर्यान्वयन में मार्गदर्शन प्रदान करेंगे एवं कुपोषण की समस्या की जड़ में जाकर उसका समाधान निकालने का प्रयास करेंगे एवं इसके बाद फलें वार व्यक्तिगत जिम्मेंदारी लेंगे ताकी सभी अपने अपने फलें में कुपोषित बच्चों की पहचान कर सके और परिवार आधार पर कुपोषण को खत्म करने के लिए क्या प्रयास करने है उस पर चर्चा करेंगे।

अगर आप सबको कुपोषण के मुद्दे को ओर अच्छे से समझना है तो निचे दी गयी कहानी के माध्यम से आप इसको बहुत अच्छे से समझ सकते है:

भंवरी की कहानी:

भंवरी जंगल के पास के एक गाँव में रहती थी जहाँ वे लोग कई तरह की फसल उगाते थे, जिसमे अनाज, दलहन, बीन्स, तिलहन, कंदमूल, मसाले, सब्जियां आदि सभी शामिल हैं। भंवरी जब बच्ची थी तो पास के जंगल से फल, हरी सब्जियां, कंदमूल और कई अन्य वनोत्पाद जिनकी जानकारी उसे अपने माता पिता से मिली थी, वह इन सबको खुशी खुशी चुन कर घर लाती थीं। उसकी शादी एक ऐसे परिवार में हो गयी जो गरीब था और उनकी आमदनी का मुख्य जरिया मजदूरी था। वो अपने खेत के एक छोटे हिस्से में मकई उपजाते थे और बाकी का सारा खेत पड़ा रहता था। जब उसने अपने पति से पूछा कि वो लोग पूरी जमीन का उपयोग खेती के लिए क्यों नहीं करते हैं, तो उसके पति ने कहा कि हमारे पास पूरे खेत के लिए पर्याप्त बीज नहीं हैं और जमीन भी बिल्कुल बंजर हो गयी है। उसने आगे कहा कि ऐसा शायद लम्बे समय तक रासायनिक खाद के उपयोग के कारण हुआ है।

भंवरी ने फिर जानना चाहा कि वो लोग जंगल से खाद्य सामग्री क्यों नहीं जमा करते हैं, जिस पर उसके पति ने कहा कि जंगल जहां से हमें पर्याप्त पोषण मिलता था वो अब उजड़ चुके हैं ।

कुछ माह के बाद जब वह गर्भवती हुई तो उसने अपने पति से कहा कि वह उसे सब्जी, मांस, मछली, अंडे, दूध आदि लाकर दे क्योंकि उसने अपने घर पर अपनी भाभी को गर्भावस्था में तरह तरह के भोजन का सेवन करते देखा है। उसका पति असहाय होकर बोला "हमारे गाँव में स्थितियां बिल्कुल अलग हैं, तुम्हारे यहाँ लोगो ने जमीन का पूरा उपयोग विभिन्न तरह के अनाज, दाल, फल और सब्जी उपजाने के लिए किया है, यहाँ तक कि घर पर पोषण पाने के लिए जानवर भी पाल रखे हैं, यहाँ हमारी स्थिति अलग हैं क्योंकि यहाँ पर हम मात्र गेहूं और मकई उपजाते हैं और उसके लिए भी बीज बाजार से खरीद कर लाते हैं। हम बाजार से हरी सब्जियां नहीं खरीद सकते क्योंकि वो बहुत महँगी होती हैं. इसलिए तुम्हे हमारी स्थिति के अनुसार ही रहना पड़ेगा। मै जानता हूँ कि इससे हमारे बच्चे पर भी असर पड़ेगा लेकिन मैं इसमें कुछ कर नहीं सकता हूँ।

भंवरी ने अपने हालात से समझौता कर लिया और उसको पूरा भोजन और आराम गर्भावस्था में नहीं मिल पाया। उसको दूसरो के खेतों में भी मजदूरी के तौर पर काम करना पड़ता था जहां कीटनाशकों का बहुत ज्यादा उपयोग होता था। इस तरह भंवरी धीरे धीरे बहुत कमजोर होती गयी और नवें माह में उसने एक कम वजन के बच्चे को जन्म दिया। भंवरी इतनी कमजोर हो गई थी कि कुछ ही महीने बाद वह मर गई। उसका बच्चा बहुत कमजोर हो गया था और एक साल की उम्र तक वह अतिकुपोषित हो चुका था इसलिए उसे अस्पताल में दाखिल करवाना पड़ा था।

इस कहानी को पढ़ने के पश्चात् आपको यह समझ आया होगा की कुपोषण कैसे एक गर्भवती माँ के लिए खतरनाक साबित होता है और बच्चें के जन्म के कुछ महीने बाद ही उसकी मौत हो जाती है और उसका बच्चा भी काफी कमजोर पैदा होता है। इसलिए सबसे जरुरी है

कि परिवार स्तर पर इस कुपोषण को रोकने के लिए इसका स्थायी समाधान भी परिवार स्तर पर ही सुनिश्चित हों और यह तभी संभव है जब परिवार कि पोषण आपूर्ति में कृषि के महत्व पर जाए और लोग खेती की विविधता के महत्व को पोषण से जोड़कर समझ सकें

बच्चें को स्वस्थ रखने में समुदाय के विभिन्न घटकों का योगदानः

संकट काल में चाइल्ड लाइन 1098 वाग्धारा संस्था का रहा आसरा

एक कहावत तो आपने सुनी होगी कि जिसको बचाने वाला अज्ञात हो तो उसके सामने मुश्किलों का पहाड़ ही क्यो न हो उसका कुछ भी अहित नही हो सकता है देष, प्रदेश व जिले में कोरोना जैसी महामारी से लोगो में एक भय सा पैदा हो गया अब क्या होगा, कैसे होगा, क्या करेगे, कहा जायेगे ऐसे अनगिनत सवालो ने सबको कटघरे में खडा कर दिया था, परन्तु चाइल्ड लाइन 1098 इस संकट काल में तारणहार साबित हुई।

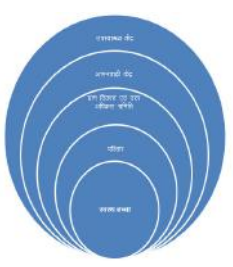

आपको बताना चाहते है कि लॉकडाउन के कारण मध्यप्रदेश राज्य के 05 मजदुर परिवारो के 17 सदस्य जिसमें से 8 नाबालिग थे जिसमे से 13 वर्षीय विकास कुश्वाह ने टोल फ्री सेवा 1098 पर फोन कर सहायता मांगी एवं बताया कि आप हमारी मदद करके हमें घर पहुचा दो हम बहुत परेशान है जैसे तैसे करके महीने डेढ माह गुजार दिया परन्तु अब गुजारा करना मुश्किल है। आप हमारा सहारा बनोगे ऐसी ही भाषा में चाइल्ड लाइन को केस मिला जिस पर जिला समन्वयक परमेश पाटीदार के द्वारा तुरन्त दुरभाष के माध्यम से बताया कि आपको एवं आपके परिवारो को किसी भी प्रकार कि अब चिंता जाहिर करने कि आवश्यकता नही है। क्योंकि अब हम एवं हमारी संस्था आपकी सेवा में है सूचना प्राप्त होने पर तुरन्त परिवार को राशन उपलब्ध करवाया टीम ने समस्त प्रकार कि जानकारी लेकर प्रशासन को अवगत करवाने के साथ-साथ उनके राज्य मध्यप्रदेश में जाने हेतु पास के लिए आवश्यक कार्यवाही शुरु कि टीम ने जिला कलेक्टर एवं उपखण्ड अधिकारी बागीदौरा को व्यक्ति जाकर पास बनाने के लिए निवेदन किया। प्रशासन द्वारा सामाजिक दूरियों का पालन करनें एवं सरकार के दिशानिर्देषों कि पालनानुसार पास जारी किया गया।

घर जाने के लिए व्यवस्था हुई परन्तु परिवार ने कहा जाये तो कैसे जाये, हमारे सामने तो आर्थिक संकट है, घर जाने के लिए गाडी किराए के पैसे तो नही है अब क्या करे। क्योकि पन्द्रह से बीस हजार कि व्यवस्था हम नही कर सकते। जिस पर संस्था सचिव जयेश जोशी अपने स्तर पर व्यवस्था कर के समस्त पानी पताशे का व्यापार करने वाले परिवारो को घर भेजा टीम द्वारा जब तक परिवार घर नही पहुचा तब तक खैर खबर लेते रहे परिवार ने अपने घर सकुशल पहुचकर वाग्धारा संस्था एवं चाइल्ड लाइन 1098 का आभार जताया एवं कहा की हम तो घर जाने की आस छोड ही चुके थे परन्तु आपकी पहल से हम घर पहुच सके। खास बात यह रही कि समस्त परिवारो के घर वापसी होने पर मध्यप्रदेश के जिला भिण्ड गांव जखमोली के सरपंच द्वारा वाग्धारा संस्था को पत्र के माध्यम से आभार जताया कि आपने हमारे समस्त मजदुर भाईयो कि सकुशल वापसी करवाई संकट काल में आप ने जो महानता दिखाई है उसके लिए हमारी ग्राम पंचायत आपकी बहुत-बहत आभारी है।

धन्यवाद

बांसवाड़ा। मध्यप्रदेश के रहने वाले बांसवाड़ा में फंसे पांच मजदूर परिवारों को वाग्धारा टीम के आर्थिक सहयोग से घर जाने की राह मिली। -चिराग श्रीमाल

प्रशासन व वाग्धारा संस्था के सहयोग से 17 मजदूरों की घर वापसी

न्यूज सर्विस/नवज्योति, बांसवाड़ा

मध्यप्रदेश के रहने वाले पांच परिवारों की प्रशासन एवं वाग्धारा संस्था के आर्थिक सहयोग से घर वापसी हुई। मध्यप्रदेश के भीण्ड जिले के रहने वाले ये लोग जिले के विभिन्न स्थानों पर अस्थाई रूप से लॉरी लगाकर पानी-पताशे का व्यापार करते रहे है। लॉकडाउन खत्म होने का इंतजार करते-करते इनका धैय जवाब दे चुका था क्योंकि धंधा नहीं होने से आवक भी बंद हो गई थी एक तरफ आर्थिक संकट तो दूसरी तरफ कानूनी अड़चने। दो दिन पूर्व विकास पुत्र रामरतन कुशवाहा निवासी भीण्ड मध्यप्रदेश ने चाईल्ड लाईन को सूचना देते हुए मदद मांगी कि वे परिवार सहित अपने घर जाना चाहते है। चाईल्ड लाईन के जिला समन्वयक परमेश पाटीदार ने बताया कि 13 वर्षीय विकास के फोन पर तुरंत कार्यवाही करते हुए चाईल्ड लाईन ने जिला प्रशासन को तत्काल मामले से अवगत कराया। चाईल्ड लाईन की टीम ने टीकरिया, सालिया, करजी एवं बड़ोदिया में अस्थाई निवासरत इन परिवारों की जानकारी जुटाई। इन लोगों ने बताया कि जिला प्रशासन एवं उपखंड कार्यालय बागीदौरा बागीदौरा ने समय-समय पर व्यवस्थाएं की। परिवहन सेवाएं भी बंद है ऐसे में हमारे लिये निजी बस कर घर जाना भी असंभव है। पाटीदार ने वाग्धारा संस्था सचिव जयेश जोशी को इस मामले से अवगत कराया तो उन्होंने आर्थिक सहयोग कर जाने की समुचित व्यवस्था करवाई। चाईल्ड लाईन टीम ने संबंधित ब्लॉक से पास जारी करवा एवं वाहन की भी व्यवस्था करवाई गई। इन लोगों को हिदायत दी गई कि वे अपने गृह जिले में जाने के पश्चात सरकार के दिशा-निर्देशों की पालना करेंगे। मजदूरों के साथ लगभग दस नाबालिग बच्चे भी है टीम ने जब इनसे अध्ययन के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि उन्हें क्रमोन्नत कर दिया गया है और स्कूल खुलते ही वे वापस आ जायेंगे। टीम सदस्य कमलेश बुनकर, बासुड़ा कटारा, कांतिलाल यदव, दिनेशचंद्र निनामा ने सभी प्रवासी मजदूरों को सेनेटाइजर, मास्क एवं भोजन पैकेट उपलब्ध करवाये।

लॉकडाउन • प्रशासन और वाग्धारा संस्था के सहयोग से 17 मजदूरों की भिंड में उनके घर वापसी

पानी पताशे का व्यापार करने वाले 5 परिवार लॉकडाउन में फंसे

जनजातीय स्वराज संगठन सहयोग इकाई की गतिविधिया

माही

जैसा कि पिछले वाली पत्रिका में हमारे समुदाय के साथियों ने पढ़ा और अपने विचार रखे इस हेतु आप सबका धन्यवाद यह पत्रिका आपके साथ हो रहे कार्यो का ही विश्लेषण है आप समुदाय के लिए हम निरन्तर प्रयासरत है एवं किस प्रकार वाग्धारा परिवार से समुदाय के हितो को ध्यान रखते हुए कार्य कार्य का विस्तार किया जायेगा। हमारे साथ जुडी बहने, बच्चो एवं गांव के समस्त परिवारो के लिए किस प्रकार विकास कि रुप रेखा तैयार कि जाये। जैसा कि आप सबको विदित है कि पिछले तीन माह से किस प्रकार से पुरा देश कोरोना से लड रहा है। जिसमें हम भी अछुते नही रहे है। इस समय में ईकाई व इकाई से जुडे विभिन्न जनजातीय स्वराज संगठन के पदाधिकारो के मध्य बैठको का आयोजन सिर्फ हमारे समुदाय के लिए जिसमे मुख्यतः -

1. खाद्य सुरक्षा से वंचित परिवारो को चिन्हित कर इनको योजनाओं से जोड़ना
2. महात्मा गांधी नरेगा से रोजगार दिलाना
3. पालनहार बच्चो को अपना हक दिलाना
4. विकलांग या पात्र व्यक्ति को सामाजिक सुरक्षा योजनाओ से जोडना
5. गांवो में कई परिवार खाद्य के बीना ना हो।

इस प्रकार से जनजातीय स्वराज संगठनो ने अपने क्षैत्र वार समस्याओ को बताया एवं जनजातिय स्वराज संगठन एवं जनजातीय स्वराज संगठन सहयोग माही ईकाई द्वारा कुल सामाजिक सुरक्षा योजना से 63 लोगो को चिन्हित किया गया इसी क्रम में महात्मा गांधी नरेगा योजना अन्तर्गत 1975 परिवार को रोजगार से जोडा गया इसके अलावा माही इकाई द्वारा मई माह में JSSI परियोजना अन्तर्गत 163 परिवारो के यहॉ पर मेड बंदी करवाना हो या यही पर 102 परिवारो के ड्रीप. इरीगेशन (बुंद बुंद सिंचाई प्रणाली) का लाभ दिलवाने के लिए उद्यान विभाग में जुडवाने का कार्य किया गया। इसके अलावा ईकाई द्वारा 60 परिवारो को पुर्णतया जैविक हल्दी वितरण कि गई। जिसका उद्देष्य परिवारो को अपने स्तर पर ही हल्दी मिल जाये और अपना व अपने परिवार का पोषण तय कर सके एवं आने वाले सालो में हल्दी कि फसल उगा सके। इसके पश्चात जनजातीय स्वराज संगठनो के साथ की गई बैठको में माही इकाई को लगा की कही न कही किसानो को काफी समय से बात करते आ रहे है कि जैविक बीज की आवश्यकता कही न कही किसानो को है इस हेतु माह जुन में हर महिलाओ को एक बीघा के लिए उडद दिया जाये जिसकी पुर्ण तैयारी कर ली गई है। पिछले मई माह में की बैठको में संगठन को लगा कि गांवो में सच्चे बचपन, सच्चे स्वराज एवं सच्ची खेती के अलावा कोरोना को लेकर एक अलख जगाने कि जरुरत है इस क्रम में भी विभिन्न जनजातिय JSSI माही द्वारा जुन माह में जनजातिय स्वराज संगठन घाटोल, खमेरा, डुंगरिया, भुंगडा, पीपलखुंट, चन्दुजी का गढा, गनोडा, अमर सिंह का गडा एवं आसपुर सहित 319 गांवो में एक रथ यात्रा का आयोजन किया गया एवं इसको सार्थक बनाने के लिए आप समुदाय द्वारा बनाए गए ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति, सक्षम समुह एवं JSS कि राय आवश्यकता रुप से ली जायेगी एवं हमारे अगले संस्करण में आवष्य प्रकाशित कि जायेगी ।

अन्त में मेरे समुदाय के साथियों जिनको आपकी जनजातीय स्वराज संगठन एवं JSSI माही जो आपको अपने परिवार का ही हिस्सा मानती है। अतः आपसे अनुरोध है कि आप सभी इसको सफल बनावे एवं आपके विचार आवश्यकता रुप से रखे।

लिख देने से नही......

आपके पढने से मुकम्मल है हमारे प्रयास

मानगढ़

जैसा की गत माह के शुरुआत में हमारी पहली पत्रिका आई थी हमे विश्वास है की आप लोगो तक पत्रिका पहुची होगी और आप ने उसे पड़ा भी होगा, गत माह की पत्रिका की शुरुआत में हमारी इकाई का परिचय बताया कि हम क्या कर रहे है, किस पर कार्य कर रहे है और किन लोगो (समुदाय) के साथ काम कर रहे है, इसी क्रम में हमने कुछ और नये कार्य व गतिविधिया की जिनको हम आप के साथ साझा करना चाहते है,

▪ हल्दी एव परंपरागत बीजो के लिए किये गये प्रयास -

कोरोना जैसी वैश्विक महामारी के बीच में भी हमारे साथियों ने समुदाय के बीच जा कर कार्य किये और उन लोगो को जागरुक भी किया, वागधारा हमेशा यही प्रयास करता आया है की किसान आत्मनिर्भर बन पाए, और इस वर्ष हमने लगभग 80 किसानो को 5 किलो हल्दी दी ताकि वो हल्दी के लिए बाजार आश्रित ना रहे और गावो में देशी हल्दी की आवश्यकता बढ़ जाये और कुछ किसानो के लिए उनकी आजीविका का साधन बन जाये, हम हमेशा से ही परम्परागत खेती एव देशी बीजो को बढावा देने की बाते करते है और बीज जो कि खेती का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है उसकी सही समय पर उपलब्ता होना अनिवार्य है इसको ध्यान में रखते हुए हमने तीनो **ब्लॉक आनंदपुरी, गगडतलाई** और फतेहपुरा एव झालोद से 12 नवीन किसानो का चयन किया जो अपनी देशी मक्का एव धान की खेती कर समुदाय के बीच देशी बीज को उपलब्ध करवायेगे जिसके फलस्वरुप किसानो को बीज की उपलब्धता समय पर हो पायेगी साथ ही साथ परम्परागत बीज की मान्यता बढ़ेगी, इसको सही तरीके से करने के लिए हमारे सहजकर्ता साथियों ने किसान की सही भूमि का चयन करवाया एवं बीज को कैसे बोया जाये, कितना पानी दिया जाये ये भी प्रशिक्षण दिया, और अब बुआई के समय में बीजो को बोया जायेगा

नर्सरी निर्माण

साथ ही साथ हमने समुदाय के हित के लिए 4नर्सरी निर्माण का कार्य करवाने का सोचा व हमने नर्सरी लगवाने के कार्य की शुरुआत हेतु किसानो को नर्सरी निर्माण सामग्री प्रदान की जैसे झारा, नेट व पोलीथिन बेग एव बीज जिससे किसान नर्सरी लगा पाए व नर्सरी करने वाले किसान अपने ही गाव में दुसरे लोगो को पौधे कम दाम में बेच सके ताकि परिवार व समुदाय का विकास हो पाए।

कोरोना जनजागरूकता एव सामाजिक सुरक्षा योजनाओ से जुडाव

कोरोना महामारी से बचाव हेतु जनजागरुकता का भी कार्य किया गया और हमारे सहजकर्ता एवं सामुदायिक संदर्भ व्यक्ति मोबाइल एव छोटे समूह के माध्यम से लोगो के बीच कोरोना को ले कर जागरुकता लाये जैसे की समय-समय पर साबुन से हाथो को धोते रहे, अपने घर के आस पास की साफ सफाई का ध्यान रखे, अगर कही बाहर जा रहे होतो मुह पर मास्क या साफ रुमाल बांध कर जाये आदि।

साथ ही हमारे हर इकाई के सहजकर्ता साथियों ने गांव के लोगो की समस्या का भी समाधान करने में मदद की जैसे आनंदपुरी ब्लाक में पालनहार की राशी पिछले 2 वर्ष से नही मिल रही थी वह राशी (30.000/-) पालन हार के खाते में डलवाई सरपंच व सचिव के सहयोग से दस्तावेज तैयार करके, साथ ही वाग्धारा के सहजकर्ता साथियों ने समुदाय के लोगो को सरकार के द्वारा जो योजनाए चल रही उसके बारे में बताया और सरकारी योजनाये के लाभ बताये साथ ही साथ गांव की छोटी मोटी समस्या पर भी समुदाय से चर्चा की, और लगभग 70 से 80 परिवारों को सामाजिक सुरक्षा योजनाओ से जनजातीय स्वराज संगठन के माध्यम से जोड़ा प्रमुख भूमिका निभाने वाले लोग जैसे जनजातीय स्वराज संगठन कोबा से मानसून बरजोड, हीरालाल कटारा, जनजातीय स्वराज संगठन आनंदपुरी से रमेश कटारा जनजातीय स्वराज संगठन गंगाड़तालाई से यशोदा देवी, नाथू भाई, प्रभुदास आदि रहे।

साथ ही साथ हमने 80 परिवारों को पंचायत द्वारा मिल रहे प्लास्टिक कारपेट भी उपलब्ध करवाये।

गत माह की तरह हमने इस बार फतेह्पुरा एवं झालोद के 1500 परिवारों को खाद्य सामग्री प्रदान की और कुल मिला कर अभी तक 6000 जरूरतमंद परिवारों को खाद्य सामग्री प्रदान कर चुके है।

▪ मनरेगा पर डाला गया जोर

साथ ही साथ हमारे हर इकाई के सहजकर्ता साथियों मनरेगा के काम को ले कर जागरुकता बढाई, मनरेगा के कार्य में मदद की, गाव के सरपंच, सचिव से बात की गाव में ज्यादा से ज्यादा मनरेगा का कार्य आये जिससे गांव के लोग गांव में ही रोजगार करे व गांव से बाहर ना जाये, व गांव में जो मनरेगा से जुडी समस्या हे उसको हमारे इकाई के सहजकर्ता साथियों ने हमारे जयपुर साथियों को फोन व ऑनलाइन मीटिंग के माध्यम से बताया, जिससे हमारे जयपुर के साथी सरकार तक पत्र के माध्यम से बात पहुचाये।

हिरण

कोविड - 19 महामारी व लॉकडाउन के बाद इकाई के सभी जनजातीय स्वराज संगठनो मे स्वयं सेवको एवं समुदाय सन्दर्भ व्यक्तियो के साथ मिलकर बहुत महत्वपुर्ण भूमिका निभाई। संगठनो ने ग्राम विकास एवं बाल अधिकार एवं सक्षम समुह की महिलाओं से जानकारी प्राप्त कर गांवो में आये प्रवासी मजदुरो की सूची बनाई इस जानकारी के आधार पर उन्होने सभी को स्वास्थ्य केन्द्र पर जॉच के लिए भेजा और साथ ही साथ साथ समुदाय आधरित क्वारेन्टाइन सेन्टर भी बनाए जिसमें शहर से आये लोगो को रहने के लिए कहा गया।

इसके उपरान्त संगठनो ने मजदुर परिवारो की आर्थिक स्थिति का भी आंकलन किया जिसके द्वारा अत्यन्त जरुरतमंद परिवारो को पहचानकर सूची तैयार की गई। संस्था द्वारा संगठनो के साथ मिलकर 6950 जरुरतमंद परिवारो को खाद्य सामग्री राशन भी उपलब्ध करवाया गया। इसके उपरान्त परिवारो को PDS से मिलने वाली सरकारी राहत से भी जुडवाया गया। इसी के साथ सरपंच व वार्ड पंचो के साथ में गांव में महामारी ना फैले उसके लिए अन्य उचित कदम जैसे लोगो को घर के अन्दर रहना, आपसी दूरी बनाए रखना, समय समय पर हाथ धोना, मास्क लगाना के लिए भी जागरुक किया गया।

रोजगार के लिए मुहिम

महात्मा गांधी रोजगार गारंटी योजना के अन्दर लोगो को काम दिलाने में संगठनो ने मुहिम छेड़ दी इसमें संगठनो ने लोगो से कार्य प्राप्त करने के लिए फार्म नम्बर 6 भरवाने का कार्य किया समुदाय सन्दर्भ व्यक्ति ओर स्वयं सेवकों ने भरे फार्म को पंचायत में लोगो के साथ जमा करने का कार्य किया इसमें वार्ड पंच साथियो ने एक अहम भुमिका निभाई और कार्य को सम्पन्न किया।

चार नर्सरी का किया निमार्ण, होगे चालीस हजार पौधे तैयार

ईकाई में इस बार चार किसानो को नर्सरी के माध्यम से संस्था द्वारा चालीस हजार पौधे तैयार करने का सहयोग किया गया इसमें कुशलगढ़ ब्लॉक के बोरखेडी गांव से जेमली देवी, टाडा वडला गांव से विरेन्द्र डिन्डोर एवं आमली पाडा गांव से सब्बु डामोर है साथ ही मध्यप्रदेष के थांदला ब्लॉक के भीमपुरी गांव से अमरसिंह डामोर भी शामिल है। इन सभी किसानो ने दस प्रकार के पौधे जिसमें सहजन, कछनार, अमरुद, नींबु, अमलतारा, सीताफल, जामुन, कटहल, बांस के पौधे तैयार किए जा रहे है ये सभी पौधे परिवार स्तर पर पोषण एवं जला वन जैसी आवश्यकताओं को पुर्ण करने के लिए अतिआवश्यक पौधे है।

अगले माह कि मुख्य गतिविधिया

1. खरीफ (चैमासा खेती) बचाव अभियान जिसमें किसानो को बीज प्रदान कर सहयोग करेगे संगठन
2. जनजागरुकता के लिए चलेगी गाड़ी 356 गांवो में
3. कुपोषित बच्चों का होगा चिन्हिकरण
4. किसानो के साथ बीज बैठक कार्यक्रम
5. जैविक खेती के किसानो के DGS के साथ प्रषिक्षण

जनजातीय समुदाय व जनजातीय स्वराज संगठनो कि कोरोना के तहत भूमिका

समय आ गया स्वराज की स्थापना करने का हमें इस के लिए दृढ़ संकल्पित कार्य करने का, क्योकि कोरोना महामारी में हमारे लिए कई मुसीबते व अवसर भी पैदा किये है इस कोरोना महामारी ने हमें सबसे बड़ी सीख एवं सन्देश भी दिया है की प्रत्येक व्यक्ति को चाहे शहर में रहता हो या गॉव में हम यह सन्देश पहुंचना चाहते की हम प्रत्येक व्यक्ति को संगठन के माध्यम से मजबूत व् आत्म निर्भर बनाना है।

हमारे जनजातीय स्वराज संगठन जितने भी मजबूत होंगे उतनी ही स्वराज की परिकल्पना पूर्ण होगी और उतना ही विकास होगा और गॉव के हर अंतिम व्यक्ति तक इसका लाभ पहुंचेगा कोरोना ने जीवन की सच्ची शिक्षा उसकी परीक्षा वास्तव में ऐसे संकट में ही होती है इस कोरोना संकट में जनजातीय क्षेत्र के गॉवो में रहने वाले लोग भले ही उन्होंने शिक्षा न ली हो लेकिन इस कोरोना के दौरान उन्होंने अपने संस्कार, अपनी परम्पराओ के आधार पर चिंता मुक्त रूप दिया है जिसे प्रतीत हो रहा है की बड़े-बड़े विद्वान भी इसकी प्रेरणा ले रहे है क्योकि इसको कोरोना संकट के दौरान आदिवासी भाई-बहनो, खेतो में काम करने वाले किसानो आदि में इस कोरोना ने देश को प्रेरणा दी है।

देश तक इतना बड़ा संकट आ गया, इतनी बड़ी महामारी आई लेकिन हमारे क्षेत्र में कार्यरत जनजातिय स्वराज संगठनों ने दो-तीन महीनो में हर व्यक्ति को जागरूक रहने का संदेश दिया भले ही हमारे पास सिमित एवं कम संसाधन रहे हो अनेक कठिनाई में आई हो लेकिन किसी के सामने जाकर झुके नहीं बजाय उनसे टकराकर लोहा लिया है, लेकिन आप संगठनों के साथियो द्वारा रुकावटे आ रही हो, परेशानी आ रही हो, लेकिन गॉव की परिकल्पना को पूरा करने के लिए पुरे सामर्थ्य के साथ जुड़े हुवे है और नई ऊर्जा नए-नए तरीके आपने कोरोना से लड़ने के लिए खोजते हुवे गॉव को बचाने और आगे बढ़ाने का काम किया है।

आप के साथ गत माह बैठक हुई जिससे बहुत अच्छा लगा आप ने बताया की मुश्किल परिस्थिति में भी गॉवो में जीवन को सुरक्षित और आसान बनाने में आपने अहम् भूमिका निभाई है, महात्मा गांधी कहा करते थे कि (मेरे स्वराज की जो कल्पना है वह ग्राम स्वराज ही है) इसीलिए आज की परिस्थिति में गॉवो को एक जुट रहना होगा क्योकि बड़ी से बड़ी शक्ति का केंद्र, संगठन या एक जुट होने से ही होता है गॉवो को आगे ले जाने कि शुरुआत हमें हमारे संगठनों को आत्मनिर्भर व सामूहिक शक्ति दिखाकर करना है।

परमेश पाटीदार (थीम लीडर)
सच्चा स्वराज, वाग्धारा

ग्रामीण विकास मंत्रालय
भारत सरकार
सत्यमेव जयते
VAAGDHARA

महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना

जॉब कार्ड एक, फायदे अनेक

जॉब कार्डधारी परिवार को महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के अंतर्गत मिलाने वाले हक

1. ग्राम/ग्राम पंचायत में निवास पात्र परिवार द्वारा जॉब कार्ड के लिए पंजीकारण उपरांत 15 दिन में जॉब कार्ड पाने का हक है। प्रत्येक जॉब कार्डधारी परिवार को अपनी ही पंचायत में एक साल में 100 दिनों के रोजगार प्राप्त करने की गारंटी का हक।
2. महात्मा गाँधी नरेगा में काम के लिए आवेदन के पश्चात रसीद प्राप्त करने और 15 दिन केभीतर काम पाने का हक है।
3. 15 दिवस में काम उपलब्ध नहीं कराया जाता है तो, बेरोजगारी भत्ता पाने का हक।
4. पांच की.मी. की परिधि में काम पाने का हक एवं घर से 5 की.मी. से अधिक दुरी के लिए 10 प्रतिशत अधिक मजदूरी पाने का हक।
5. ग्राम पंचायत में आयोजित ग्राम सभा में कम के चयन का हक।
6. पंद्रह दिवस में मजदूरी का भुगतान पाने का हक यदि इस अवधि में मजदूरी का भुगतान नही किया जाता है ,तो क्षतिपूर्ति भत्ता पाने का हक।
7. महात्मा गाँधी नरेगा कार्यस्थल पर मजदूरों के लिए छाया,पानी, दवाईयां एवं पालना जैसी सुविधाए प्राप्त करने का हक।
8. महात्मा गाँधी नरेगा कार्यो से सम्बंधित सभी दस्तावेजो की अनिवार्य पारदर्शिता हक।
9. कार्यो से सम्बंधित लेखो के सामाजिक अंकेक्षण करने का हक।
10. ग्राम पंचायत, पंचायत समिति व जिला स्तर पर शिकायत दर्ज कराने पर एक सप्ताह के भीतर निपटारे का हक।

उक्त हितो को पाने में किसी भी प्रकार की परेशानी /बाधा या अन्य कोई शिकायत दर्ज करवाने के लिए संपर्क करें - टोल फ्री न. 1800 -180 -6127

वर्षा ऋतु में पशुओ की देखभाल

साधारणतया वर्षा ऋतु का समय 15 जून से 15 सितम्बर तक का होता है। इस दौरान वातावरण में अधिक आद्ता होने की वजह से वातावरण के तापमान में अधिक उतार चढ़ाव देखने को मिलता है जिसका कुप्रभाव प्रत्येक श्रेणी के पशुओं पर भी पड़ता हैं। वातावरण में आद्ता की अधिकता होने के कारण पशु की पाचन प्रक्रिया के साथ-साथ उसकी आन्तरिक रोग प्रतिरोधक शक्ति पर भी असर पड़ता है परिणामस्वरूप पशु अनेक रोगों से ग्रसित हो जाता हैं। इसी मौसम के दौरान परजीवियों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि देखने को भी मिलती है जिनके द्वारा पशुओं को प्रोटोजोवन एवं पेरासाईंटिक रोग हो जाते हैं। इन रोगों के प्रकोप से पशु का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है जिससे पशुपालकों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। वर्षा ऋतु में पशुओ में रोग बड़ी तीव्र गति से फेलते है , विशेष कर दुधारू पशुओ में कुछ सावधानियाँ रखकर पशुओ को इन रोगों से बचाया जा सकता है। ये प्रमुख रोग इस प्रकार है।

वर्षा ऋतु में होने वाले प्रमुख रोगः

1. गलघोटू बीमारी (एच. एस)

बारिश की वजह से पशु (मुख्यतः भैंसें) की आन्तरिक रोग-प्रतिरोधक क्षमता घट जाती है जिससे उनके शरीर में मौजूद बीमारी के जीवाणु भयंकर रूप धारण कर लेते हैं। इस बीमारी में पशु तेज ज्वर से पीड़ित होता है एवम् उसके गले में कठोर सुजन आ जाती हैं। जिस कारण उसे साँस लेने में तकलीफ होती है और अंत में दम घुटने से मौत हो जाती हैं। यह एक जीवाणु जनित संक्रामक रोग है जो एक से दुसरे पशु में आ जाता है।

उपचार-

- पशु-पालकों को रोग-ग्रसित पशु को दूसरे स्वस्थ पशुओं से अलग कर पशु चिकित्सक द्वारा उपचार कराना चाहिए।

बचाव एवम् रोकथाम-

- वर्षा शुरू होने से पहले पशु पालक को नजदीकी पशु चिकित्साल्य में जाकर अपने पशुओं को गलघोटू रोग का टीका लगवाये। अगर पशु इस बीमारी से मर जाता है तो उस स्थान को अच्छी तरह फिनाइल या चुने से धुलवाना चाहिए।
- रोग के प्रारंभिक लक्षण दिखते ही तुरंत पशु चिकित्सक से परामर्श ले।
- रोगी पशु को घर से दूर रखे।
- हमेशा पशु आवास को स्वच्छ एवं साफ सुथरा रखे।

2. लंगड़ा बुखार/ तीन दिवसीय बुखार (ब्लैक क्वाटर्स डिसीज)

नाम स्वरूप इसमें पशु तीन दिन तक तेज ज्वर से ग्रसित रहता हैं। उसे खड़े रहने में कमजोरी महसूस होती है जिस कारण जानवर बैठा रहता हैं। इसे जहरबाज़ रोग भी कहा जाता है। यह रोग सभी स्थानों पर पाया जाता है। आद्र्रता/ नमी वाले क्षेत्रो में ज्यादा प्रभावी होता है। मुख्यतय यह रोग गाय , भैस , बकरी एवं भेड़ो में पाया जाता है। यह रोग क्लोस्ट्रोडीयम चैवियाई नामक जीवाणु से फैलता है।

लक्षणः- तेज बुखार, तापमान 105 थ् से 107 थ्, पशु खाना पीना छोड़ देता है, यह रोग पैरो को अधिक प्रभावित करता है। घुटनों के ऊपर सुजन आ जाती है शुरुआत में यह सुजन दर्द कारक होने से पशु को तेज बुखार आ जाता है एवं बाद में यह सुजन कंधे की मांसपेषियो तक पहुच जाती है एवं पैरो में अतिरिक्त सुजन आ जाती है। सुजन के ऊपर चमड़ी सुख कर कड़ी हो जाती है एवं दबाने से चड़-चड़ की आवाज आती है , यह आवाज सुजन में गैस भरी होने के कारण आती है यह रोग की मुख्य पहचान है।

उपचार- मीठा सोडा तथा सोडियम सैलिसिएट को बराबर मात्र में पिलाने से पशु को आराम मिलता हैं।

बचाव एवम् रोकथाम

- वर्षा ऋतु से पहले इस रोग का टीका लगवा लेना चाहिए। पहला टीका छः माह की आयु में लगाया जाता है।
- पशु-पालक रोग-ग्रसित पशु को दूसरे स्वस्थ पशुओं से अलग कर पशु चिकित्सक द्वारा उपचार कराएं।
- भैसों में यह टीका उन कतराने के तीन माह पूर्व लगाना चाहिए ,क्योकि उन कतराते समय घाव होने पर जीवाणु घावो के माध्यम से शरीर में प्रवेश कर सकते है जिससे संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है।

- सुजन को चीरा लगाकर खोल देना चाहिए जिससे जीवाणु हवा के सम्पर्क में आकर अप्रभावी हो जाते है।

3. चेचक रोग (स्माल पॉक्स)

यह रोग पशुघर में गन्दगी के रहने से होता हैं। इसमें पशु की गादी (आयन) पर लाल रंग के दाने निकलने के साथ-साथ तेज बुखार भी होता हैं।

उपचार- थनों एवं गादी को पहले पोटेशियम पर्मैगनेट (लालदवा) के घोल से धोएं और उसके पश्चात मलहम लगाने से पशु को आराम मिलता हैं।

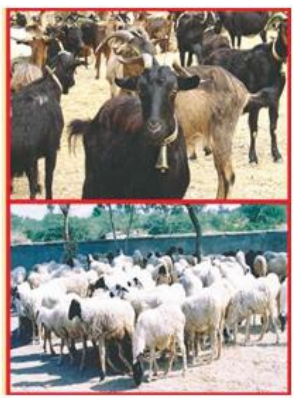

4. भेड़ - बकरियों में फिड़किया रोग (एंट्रोटोक्सीमिया -म्ज्)

कारकः - यह बीमारी क्लॉस्ट्रीडियम समूह के जीवाणु से होती है।

लक्षणः - ▪ पशु जमीन सूंघने लगता है , ऐसे दिखाई देता है जैसे चराई कर रहा हो। ▪ पेट में दर्द के कारण वह बैचेन होकर उछलने कूदने लगता है।
▪ पशु में आफर होना ▪ पशु की मांसपेषियो में खिंचाव ▪ सिर को दीवार या खम्भे पर मारना ▪ पशु का जमीन पर गिरना एवं टांगो और गर्दन में खिचाव आना ▪ आँखे चैकन्नी नजर आती हैं तथा मुँह से झाग निकलते हैं। ▪ पशु का जल्दी जल्दी सांस लेना और मांसपेषियो का फड़कना। ▪ पशुओ में दस्त होना ▪ पशु का गिरना तथा लेटे-लेटे साईकिल की तरह पैरों को चलाना।
▪ लक्षण प्रकट होने के दो से तीन घंटे में मृत्यु हो जाना ▪ बचाव व उपचारः-
▪ प्रोटीन युक्त चारा खिलावे ▪ शाम को बाड़े में बांधते समय भेड़-बकरी का निरीक्षण अवश्य करे ▪ आफर आने पर 10 से 20 ग्राम मीठा सोडा पिलाये ▪ बीमार पशु को झुंड से अलग कर देवे ▪ जिन क्षेत्रो में बीमारी का प्रकोप है वहा चराई नहीं कराये।
रोग से बचने के लिए मार्च,अप्रेल माह में टीकाकरण करावे। 5 . भेड़-बकरियों में पी.पी. आर.रोग यह रोग “स्यूडो रिंडरपेस्ट”/“काटा” के नाम से भी जाना जाता है।

कारकः- इस रोग का जनक विषाणु (वायरस) के कारण फैलता है। फैलावः- रोगी पशु के संपर्क में आने, उसके मल, मूत्र एवं आँख ,नाक व मुँह से होने वाले स्त्राव तथा दूषित चारे व पानी से यह रोग फैलता है।

लक्षणः-

▪ शुरूआती अवस्था में नाक से पानी जैसा स्त्राव जो बाद अवस्था में गाड़ा व मवाद युक्त होकर नाक बंद कर देता है, जिससे पशु मुँह खोलकर श्वांस लेने लगता है।
▪ पशु को तेज बुखार आता है। ▪ खांसी व निमोनिया के लक्षण होना
▪ मसूड़े व जीभ पर छाले एवं होंठो पर सुजन आ जाना। ▪ पशु को दस्त होना
▪ आँखों में सुजन व झिल्ली का गहरा लाल हो जाना

बचाव व उपचारः-

▪ रोगी पशु को अलग रखे ▪ पशु आवास सुखा एवं स्वच्छ रखे
▪ चार माह से ऊपर उम्र वाली भेड-बकरियों को टीकाकरण कराये।

6. परजीवियों का प्रकोप

बरसात होतें ही परजीवियों की संख्या में स्वतः अत्यधिक वृद्धि हो जाती हैं। जिससे पशुओं को शारीरिक व्याधियों का सामना करना पड़ता हैं। यह प्रायः दो प्रकार के होते है -

1. अन्तः जीवी- जैसे पेट के कीड़े ,कृमी आदि
2. बाह्य जीवी -चीचड, मेंज, जूं आदि

लक्षण - रोग ग्रसित पशु में सुस्ती, कमजोरी, एनीमिया (खून की कमी) एवं दूध में कमी देखने को मिलती है। पशु को पाचन प्रक्रिया में शिकायत रहती है जिससे पेट में दर्द और पतला गोबर आता है।

उपचार-पशुचिकित्सक की सलाह से पशुओं को उनके वजन के अनुसार परजीवी नाशक दवा नियमित रूप से वर्ष में दो बार पिलायें।

बचाव - बारिश के मौसम में पशुओं को तालाब, नदी , नाले के किनारे न लेकर जाएँ। इसके साथ-साथ जल स्त्रोत के किनारों वाली घास न खिलाएं, क्योंकि ये घास कीड़ों के लार्वों से ग्रस्त होती है। जो की पेट में जाकर कीड़े बन जाते है और पशु को बीमार करते है।

7. खाज-खुजली

इस बीमारी का मुख्य कारक भी पशुघर में गंदगी का होना ही है। इसमें त्वचा पर अत्यंत खुजलाहट होती है जिसकी वजह से त्वचा मोटी होकर मुरझा जाती है और उस जगह के सारे बाल झड जाते हैं। कभी-कभी इन जगह पर जीवाणुओं के आश्रय से बहुत गन्दी दुर्गन्ध भी आती हैं।

उपचार-रोगी पशु का चिकित्सक द्वारा परीक्षण कराकर उपचार करवाना चाहिए।

उपरोक्त बिमारियों को ध्यान में रखने के साथ-साथ पशुपालकों को पशु प्रबंधन सम्बन्धी बातों पर भी गौर करना चाहिए जो की निम्नलिखित हैं।

1. पशुशाला की खिड़कियाँ खुली रखनी चाहिए जिससे पशुओं को उमस एवम् गर्मी से राहत मिल सकें।
2. पशुघर में पशु के मलमूत्र के निकासी का उचित प्रबंध होना चाहियें। पशुघर को कभी-कभी फिनाइल के घोल से अवश्य साफ करना चाहिए
जिससे दुर्गन्ध फैलाने वाले बैक्टीरिया का असर कम हो सकें।

3. पशु को खेतों के समीप गड्ढे या जल स्त्रोत का पानी पिलाने से परहेज करें क्योंकि इस दौरान किसान खेतों में खरपतवार एवं कीटनाशक का इस्तेमाल करतें है जो की रिसकर इन में आ जाता हैं। कोशिश करें की पशु को बाल्टी से साफ एवं ताजा पानी पिलाएं।
4. पशु को हरा चारा अच्छी तरह झाड़ कर खिलाएं क्योंकि बरसात के समय घोंघों का प्रकोप अधिक होता है एवम् यह चारे के निचलें तनें एवम् पत्तियों पर चिपकें होतें हैं। घोंघें मुख्यतः फ्लूक के संरक्षक होते हैं। इसलिए पशुपालकों को सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि पशुओं का चारा घोंघों से ग्रसित न हों। 5. सरकारी अस्पताल में जाकर अपने पशुओं का टीकाकरण अवश्य करवाएं जैसे गलघोंटू के टीके, मुँह पका, लंगड़ा बुखार, ई टी, पी.पी.आर. , पोक्स रोग के टीके इत्यादि।
6. 15 दिन के अन्तराल पर परजीवियो की रोकथाम हेतु कीटनाशक दवाइयों को पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार प्रयोग करें। 7. यदि इस मौसम में अन्य कोई विकार पशुधन में उत्पन्न होते है तो तुरंत पशु चिकित्सक की सलाह लेकर उपचार करें।
8. चारा नीचे फर्श पर डालकर ना खिलावे, चारा कुण्डी का प्रयोग करे एवं बकरियों को चारा ऊपर टांक कर खिलावे। 9. अपने घर के आस पास चारा देने वाले पेड़ लगावे जैसे सुबबूल,नीम, कीकर,बेर, सहजन, अरडू , खेर , बांस ,षीषम, खाखरा, आम , जामुन आदि 10. पशुघर में हमेशा मसाले की ईट बना कर रखे ताकि पशुओं खनिज लवण की आपूर्ति हो सके। 11. पशुघर में मूत्र निकासी की व्यवस्था होनी चाहिए। 12. पशुघर समतल होना चाहिए। फर्श पर खड्डे नियमित भरे जाने चाहिए। 13. पशुघर में पशुओ के खुला एवं बंद दोनों प्रकार की व्यवस्था होनी चाहिए। 14. पशुओ की संख्या के आधार पर पशु घर का आकर होना चाहिए। 15. बड़े पशु एवं छोटे पशु दोनों का पशु बाड़ा अलग-अलग होना चाहिए। 16. पशुघर में छाया , पानी , रोशनी व हवा की उचित व्यवस्था होना चाहिए।

सोहननाथ जोगी - JSS मॉडल, आनंदपुरी

पलायन छोड, खेती कर बने आत्मनिर्भर

बॉसवाडाः यह तीन उदाहरण है जो बताते है कि कैसे संकट के दौर में खाली हाथ नही बैठना है आत्मनिर्भरता कि और कदम बढाने का मंत्र शायद हमारे किसान भाईयो ने पहले ही ठान लिया है चैतरफा संर्घष और ना उम्मीद के दौर पर बॉसवाडा जिले के आनन्दपुरी,घाटोल,कुशलगढ के जनजातिय स्वराज संगठन सहयोग ईकाई में जहा दो चार नही बल्कि कई किसान परिवारो ने खेतो मेंअपनी गुजर बसर कि नई उम्मीदो को बोया है। संकट उनके घर दस्तक दे उससे पहले ही उन्होने अपने कंधो पर खेती कि जिम्मेदारी उठा ली यह परिवार कही न कही मेहनत मजदुरी में लगे थे जहा भी काम मिलता था वहा रोजगार के जरिये अपना पेट पाल रहे थे लेकिन जिसमें किसानो ने अपनी परम्परागत खेती एवं परम्परागत रोजगार जैसे औजार तैयार करना,अपनी खेती को स्वयं के संसाधनो से तैयार करना इत्यादि का सहारा लेकर कोरोना जैसी महामारी ने उनके आत्मविश्वास को कमजोर नही किया

केस 1

गांव हड़मत ब्लॉक गांगडतलाई वलजी भाई हड़मत गांव गांगडतलाई ब्लॉक के एक छोटे आदिवासी किसान है जो एक अच्छे समृद्ध जीवन का सपना देख रहे थे लेकिन अपने जीवन में बांधाओ के कारण हासिल नही कर पा रहे थे खेती उनके परिवार के लिए आजीविका का एक मात्र स्त्रोत था लेकिन उनके पास केवल 2.5 बीघा जमीन थी और उससे उनको प्रर्याप्त लाभ नही मिल रहा था। जिससे जिसे वह अपनी आजीविका के लिए गांव व गांव से बाहर जाकर मजदुरी करते थे क्योकि उन्हे अपने परिवार का भरण पोषण करना था।

जब वाग्धारा संस्था उनके गांव में कार्य करने के लिए आई तब उनके गांव में बन रहे संगठन के बारे में उनको पता चला और उन्होने अपनी पत्नी को सक्षम समुह से जोडा एवं सक्षम समुह के माध्यम से उन्होने खेती के विभिन्न पद्धति के बारे में सीखा जैसे मिक्स फसल करना, पानी कि बचत करना,मेड बंदी के फायदे, और फिर वाग्धारा संस्था के तहत उन्हे फलदार पौधे एवं सब्जी के बीज दिए गए जिसके माध्यम से उन्होने आधा बीघा जमीन में सब्जी कि खेती शुरु कर दी और खेती कि पद्धति उन्होने सीखी उन्हे अपने खेत में अपनाया और साथ ही देशी खाद्य दवाईयो का प्रयोग भी करना शुरु किया जिससे रासायनिक खाद्य एवं दवाईयो पर उनकी निर्भरता खत्म हुई साथ 1200 से 1300 रु प्रति सीजन बचत होती सब्जी में उन्होने भिण्डी, पालक, टमाटर,बैगन,मुली, धनिया, मैथी आदि कि खेती कि जिसके कारण घर कि रसोई काम में आने वाली सब्जीयो कि आपुर्ति आसानी से हो जाती थी और साथ ही साथ पोषण युक्त आहार भी उनको मिलता था। इसके अलावा 700 से 800 प्रति माह सब्जी पर खर्च बच जाता था और अधिक मात्रा में होने वाली सब्जी जैसे भिण्ड, टमाटर, बैंगन को बाजार में बैचने से उन्हे 3000 से 4000 कि प्रति फसल चक्र कमाई हो जाती है। इस आंकडे के हिसाब से अगर उनकी आधा बीधा में सब्जी करने कि सालाना आया एवं बचत को मापे तो तो लगभग 13000 से 14000 हजार तक होती है। पैसो से ज्यादा महत्व हमें तब देखने को मिला जब कोरोना जैसी वैश्विक महामारी के बीच बाजार बन्द था और खाद्य सामग्री उपलब्ध नही हो पा रही थी उस समय भी हमारे पास सब्जी कि उपलब्धता थी और वह आत्मनिर्भर थे और साथ ही उनहोने आस-पास के लोगो को लॉकडाउन के वक्त सब्जी कि उपलब्धता कराई।

केस 2

माडी देवदा साथ गांव (कुशलगढ़ ब्लॉक)
यु तो माडी के परिवार में उनके 3 बच्चे और पति है, लेकिन परिवार के पास कम जमीन होने के कारण आय के स्त्रोत ज्यादा नही है माडी देवदा के पति मजदुरी करने शहरो में पलायन करते थे। जमीन कम होने के कारण फसल की पैदावार आय का स्त्रोत नही था, साथ ही साथ घर में पोषण सम्बधित शाक सब्जीया भी नही कि जाती थी वाग्धारा संस्था के साथियो के गांव में काम करने के बाद माडी गांव के सक्षम समुह में जुडी माडी निरन्तर मासिक बैठको में हिस्सा लेती व मौसम के अनुसार खेती में बताए जाने वाली जानकारी जैसे दवाईया बनाना, देशी खाद्य बनाना, देशी बीजो को अवेरकर रखना,साथ ही साथ इन सब के लिए बाजार के उपर कम से कम निर्भरता हो उस पर हिस्सा लिया बैठको के साथ साथ संस्था द्वारा कैचुए वाली खाद्य बनाने के लिए पोषण वाटिका के लिए सब्जीयो के बीज और फलदार पौधे भी प्रदान किए गए। माडी देवदा ने बैठको में ली जानकारी और संस्था द्वारा प्रदान किए संसाधनो का उपयोग कर कम खर्च में सब्जीयो का उत्पादन शुरु किया इस प्रक्रिया में माडी ने महसुस किया कि देषी खाद्य व दवाईयो के उपयोग सब्जीयो का उत्पादन बहुत कम खर्च किया जा सकता है। साथ ही साथ इन सब्जीयो का उपयोग अपने घर के रसोई में चालु कर दिया जिससे परिवार में पोषण कि कमी दुर हुई और बाजार के उपर सब्जीयो कि निर्भरता खत्म हो गई। अब माडी देवदा का सब्जीयो का उत्पादन बढने लगा और अतिरिक्त उत्पादन को माडी स्थानिय बाजार में बेचेने लगी।

महामारी और लॉकडाउन के समय जब बाजारबन्द थे तब माडी ने अपने गांव में कई लोगो को सब्जीया प्रदान कर उन्हे भी मदद कि इससे सिर्फ माडी ही नही गांव के कई अन्य घरो को फायदा मिला और माडी ने लॉकडाउन के समय आने वाले सीजन में गांव मे कई परिवार को सब्जीया उगाने के लिए प्रेरित करने का कार्य किया। सब्जीयो के सीजन में 900 से 1100 प्रति माह सब्जीया बैच कर कमाई कि गई।

केस 03

नाम - श्रीमती वाजी पत्नी धनजी निनामा स्थान - फूटिया डूंगरी, मियासा खण्ड - घाटोल, बाँसवाड़ा

आदिवासियों का जीवन एक लंबे अरसे तक संघर्षों से घिरा रहा है। इसी संघर्ष के काल खण्ड में वाग्धारा संस्था ने इनके जीवन को स्थायी आजीविका प्रदान करने के उद्देश्य से 2018मे एक मुहिम शुरू कर इनके संघर्षों से मुक्ति दिलाने का प्रयास किया । समुदाय को विकास की राह पर मजबूती से खड़ा करने के लिए ग्राम स्तरीय समितियों का गठन किया गया। समुदाय आधारित विकास के प्रति समर्पित स्वदेशी ज्ञान के संरक्षण को स्वयं के विकास की सोच के साथ आगे बढ्ने के लिए ये कदम उठाया गया।

ये कहानी है बांसवाड़ा जिले में घाटोल खण्ड के फूटिया डूँगरी गाँव निवासी श्रीमती वाजी की जिनके परिवार में उनके अतिरिक्त उनके पति, पुत्र, पुत्रवधू तथा उनके 2बच्चों सहित 6सदस्य हैं। 2018से पूर्व वाजी को अपनी आजीविका कमाने के लिए परिवार सहित निकट के गाँव में मजदूरी करने जाना पड़ता था। संस्था के द्वारा वाजी जैसे परिवारों के किसानों तथा महिलाओं को महिला सक्षम समूह के माध्यम से, किस प्रकार खेती की जा सकती है , इस बात की जानकारी दी गई।

वाजी ने भी इस तरह की बैठकों में भाग ले कर जैविक खेती और पोषण वाटिका (किचन गार्डेन) की बारीकियों को समझा। यद्यपि परिवार के पास उत्पादक खेती करने लायक संसाधनों की कमी थी,उसने इस जानकारी को परिवार तथा समुदाय के साथ साझा कर इस पर चर्चा की।

इसी समय 15गाँवों में रहने वाले समुदाय के लोगों को खाद्य सुरक्षा में सतत सुधार लाने के लिए महिलाओं और समुदाय की आजीविका वृद्धि के लिए कार्यक्रम शुरू किया गया। ये पहला अवसर था जब किसानों को मृदा-किट, प्लास्टिक ड्रम, वर्मी कम्पोस्ट और किचन गार्डन के लिए बीज वितरित गए। खेती के लिए एक अच्छी कृषि पद्यति को बढ़ावा देने के विचार से ये वितरण किया गया था और इस वितरण को लेकर वाजी का परिवार और जीवा अपने आप को अधिकतम कृषि उत्पादन के लिए तैयार कर चुके थे।

एसएस से मिली जानकारी तथा परियोजना के अनुभव ने उन्हें हिम्मत और समझ प्रदान की जिससे वे इस बात के लिए आश्वस्त हुए कि कृषि, आजीविका का प्रमुख स्त्रोत बन कर, जीवन को सतत रूप से चला सकती है । इसके बाद वाजी ने सक्षम समूह से सब्जी उत्पादन की गहन जानकारी प्राप्त की ।

वर्ष 2019में वाजी ने अपने छोटे से खेत में टमाटर , मिर्च , बैंगन , और बेल पर उगने वाली सब्जियाँ उगाई। पर्याप्त पानी की उपलब्धता तथा प्राप्त जानकारी के कारण वाजी 35000रुपये की सब्जी पास के बाजार में बेचने में कामयाब हुई। वाजी के जीवन में एक नई उम्मीद पैदा हुई जिससे उसके परिवार ने इस पैसे से एक पानी की मोटर खरीदी ताकि वह गर्मीयों में भी सब्जी उगा सके।

कोविड -19में सब्जी का उत्पादन सफल रहारू कोरोना संकटकाल में जब अधिकांश परिवार तालाबंदी में अपनी रोजी-रोटी के लिए सरकार से मदद की उम्मीद लगाए बैठे थे उस समय वाजी के परिवार के पास खुद की उत्पादित सब्जियों को बेचने का एक अतिरिक्त और स्थायी विकल्प उपलब्ध था। कोरोना काल में भी वाजी और उसके परिवार ने सब्जियाँ बेच कर 20000-22000की कमाई की।

सफलता कि कहानी

नाम - श्री रामलाल / धीरजी सिंगाड़ा
गाँव - नाना भूकिया, पंचायत समिति - आनंदपुरी

श्री रामलाल सिंगाड़ा दक्षिण राजस्थान के बांसवाडा जिले के आनंदपुरी पंचायत समिति के नाना भूकिया गाँव के रहने वाले है। गाँव का नाम भूकिया से ही प्रतीत होता है कि गाँव का नाम भुखमरी की वजह से पड़ा है यह गाँव मानगढ़ से मात्र 6 कि.मी. एवं पंचायत समिति कार्यालय से मात्र 02 कि. मी. पर स्थित है। परिवार में पति पत्नि को मिलकर कुल 08 सदस्य है। मैं भी आम आदिवासी किसान कि तरह साधारण खेती करता था तथा हमेषाश्अनिष्चिता से जिन्दगी जी रहा था जिसमें परिवार के सदस्यो से लेकर मवेषी तथा भुमि भी हमेषा बिमार रहती थी वाग्धारा संस्था से जुड़ने से पूर्व मेरे पास 03 एकड़ जमीन , 02 भैंस , 01 गाय , 03 बकरी थी। खेती बाड़ी की सामग्री जैसे खाद्य, बीज, दवाई आदि बाजार से खरीद कर लाते थे।

वित्तीय वर्ष 2018-2019 में श्री रामलाल वाग्धारा संस्था द्वारा नाबार्ड की मदद से वाड़ी लगाने के लिए हुई मीटिंग में आये और संस्था के साथ जुड़ गए। इन्होने ग्रीष्म ऋतु के माह मई में एक एकड़ जमीन में ले आउट लिया एवं 8 मी. × 08 मी. पर 40 फलदार पौधों के लिए खड्डे खोदे (01मी.'× 01मी.) साथ ही 75 वानिकी पौधे रोपण हेतु खेत के मेड के चारो और खड्डे खोदे एक माह में खड्डे धुप में तपने के बाद खड्डो में किटनाशी से उपचारित कर उन्हें नीम की खाद्य , हड्डी की खाद्य , नाइट्रोजन दृपोटास-फोस्पोरस की खाद्य एवं देशी खाद्य को मिलाकर खड्डे को पूरी तरह भर दिए। दो बारिश अच्छी होने के बाद संस्था से प्रशिक्षण लेकर 20 आम , 15 अमरुद , 05 निम्बू तथा 75 बहुउद्देश्य पौधों का पौधा रोपण किया गया। मेड पर अरंडी , सीताफल , सुबबूल, सहजन के बीज लगाये। वाड़ी की आधा बीधा जमीन में सहफसल के रूप में सब्जी लगाई तथा बाकि बची जमीन में दलहन लगाई। पत्नी नानी एवं बहु रमिला शिवाजी स्वयं सहायता समूह से जुडी है और समूह के सभी सदस्यों को एक-एक सिरोही बकरी एवं एक ब्रीडिंग बकरा संस्था द्वारा संचालित सामाजिक एवं आर्थिक विकास परियोजना की मदद से प्रदान किया गया। संस्था के साथियो ने काम में मेरी रूचि देखकर मुझे पौधों की नर्सरी लगाने के लिए प्रेरित किया, प्रशिक्षण दिया एवं सहायता सामग्री के रूप में सहायता प्रदान की गई। मैंने 10000 सहजन, आम, अरडू , जामुन, बांस, सीताफल, अनार आदि के पौधे तैयार किये गए। संस्था द्वारा नियमित अन्तराल में प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाता है जिसमे मै, मेरी पत्नी नानी और मेरी बहु रमिला नियमित रूप से भाग लेते है जैसे आधार शिला प्रशिक्षण, जेंडर प्रशिक्षण, उन्नत पशु प्रबंधन प्रशिक्षण, स्वयं सहायता समूह प्रबंधन प्रशिक्षण , जल प्रबंधन प्रशिक्षण, सिफ्स च्स्।, किचन गार्डन प्रशिक्षण, पौध रोपण प्रशिक्षण, थावला, मल्चिंग नर्सरी प्रबंधन प्रशिक्षण, जैविक खेती प्रशिक्षण आदि। जैविक खेती के प्रशिक्षण में मैंने दस पुरानी दवाई, नीम की दवाई, कम्पोस्ट खाद्य, वर्मी कम्पोस्ट खाद्य आदि बनाना सिखा और संस्था से मुझे दवा बनाने के लिए ड्रम, वर्मीबेड, झारा आदि सामग्री उपलब्ध करवाई गई, इन सामग्री का उपयोग मै खाद्य बनाने, दवा बनाने में लेता हूँ। आज रामलाल ने जैविक खेती पद्धति से 12 क्विंटल मक्का, 20 क्विटल गेहू , 03 क्विटल दलहन का उत्पादन किया है, इसमे उन्होंने वर्मी कम्पोस्ट , कम्पोस्ट, दस पुरानी, नीम दवा आदि का उपयोग किया है, एवं बाजार से किसी भी प्रकार का कीटनाशी एवं खाद्य का क्रय नहीं किया है। बाजार की रेट के हिसाब से आकलन के आधार पर लगभग 80000 रु. का उत्पादन हुआ। घर के उपयोग के बाद आज रामलाल सिंगड़ा की पहचान एक सिफ्स किसान के रूप में होती है और आस-पास से 15-20 गाँवो के लोग उनके पास सिखने और देखने आते है। 4500 रु. की सब्जी बेचीं। 22000 के नर्सरी से पौधे बेचे। आज मै सिख कर अपनी नर्सरी में आम और निम्बू की कलम कर पौधे तैयार कर रहा हूँ। साथ ही पपीता, जामुन , मीठा नीम, कटहल आदि तैयार कर कर भी बेच रहा हूँ। आज मेरे पास 04 सिरोही बकरी 02 सिरोही बकरा सहित कुल मिलाकर 12 बकरिया है।

पहेलियाँ

1. लाल हूँ, खाती हूँ मैं सूखी घास।
पानी पीकर मर जाऊँ, जल जाए जो आए मेरे पास।

2. जल से भरा एक मटका, जो है सबसे ऊँचा लटका।
पी लो पानी है मीठा, जरा भी नहीं है खट्टा।

उत्तर - 1. आग, 2. नारियल

क्या आप जानते हैं

- जितनी ऑक्सीजन हम साँस के द्वारा लेते हैं उसका 20 से 25 प्रतिशत हिस्सा हमारा दिमाग इस्तेमाल करता है।
- हमारे शरीर में सबसे ताकतवर मासपेशी हमारी जीभ है।
- सिर्फ वायु प्रदुषण से हर साल 70 लाख लोगों की मौत होती है।
- एक मध्यम आकार के बादल का वजन 80 हाथियों के बराबर होता है।

अंक पहेली:

रिक्त स्थान भरें: -

3	7	6	5
8	2	1	10
7	7	3	4
4	6	9	?

2	6	6	5
7	1	1	10
6	6	3	4
3	5	9	?

पत्रिका का यह भाग आपको कैसा लगा कृपया अपने विचारों से हमें नीचे दिए गये **मोबाइल नम्बर पर सन्देश या कॉल द्वारा बताएं :**
8890266208, 9549257803
आराध्य शंकर गौड़, कार्यक्रम अधिकारी, बाल अधिकार

• बाल कहानी •

कछुआ और हंस

किसी तालाब में एक कछुआ रहता था। उस तालाब में दो हंस भी रहते थे जिनकी कछुए से बड़ी अच्छी दोस्ती थी। वे हंस उस कछुए को हमेशा दूर देशों, वनों और पहाड़ों की कहानियां सुनाया करते थे क्यों कि वे लम्बी-लम्बी यात्राएं किया करते थे। वे अक्सर यह भी बताते थे कि आसमान से देखने पर धरती कितनी सुन्दर लगती है। कछुआ भी बादलों में घूमना चाहता था। उसने हंसों से निवेदन किया कि कोई तरकीब लगाकर उसे भी आसमान की सैर कराएं । हंस ने वादा किया वे इसका कोई न कोई उपाय जरूर सोचेंगे। उसके बाद हंस एक छड़ी लेकर आए और कछुए से कहा कि उसे बीच से मुंह से पकड़ ले। हंसों ने कहा वे उस छड़ी को दोनों तरफ से अपनी चोंचों से पकड़ लेंगे और कछुए को लेकर आसमान में उड़ जाएंगे। लेकिन उन्होंने यह भी बताया कि उड़ान भरते समय कछुए को अपना मुंह बंद रखना होगा वरना वह आसमान से सीधा धरती पर आ गिरेगा । इस तरह से कछुए की रोमांचकारी उड़ान शुरू हो गई। पलक झपकते ही वे हंस हवा से बातें करने लगे। कछुए के लिए तो यह जैसे किसी स्वप्न के समान था। अपनी पूरी जिंदगी में उसने अपने तालाब से बाहर कुछ भी नहीं देखा था। कुछ देर बाद वे किसी गाँव के ऊपर से उड़ रहे थे। गाँव के कई लोग आश्चर्य से उन्हें देख रहे थे। किसी ने कभी भी कछुए को इस तरह आसमान में उड़ते नहीं देखा था। चारों और भारी कोलाहल मचा हुआ था। कछुआ सभी के आकर्षण का केंद्र बना हुआ था। उसे लगा कि वह स्टार बन गया है। अपने उल्लास को जाहिर करने के लिए वह जोर से चिल्लाया। लेकिन उसका उल्लास क्षणिक था, क्यों कि वह धड़ाम से जमीन पर गिरा और उसके प्राण पखेरू उड़ गए। शिक्षाः किसी के द्वारा दी गयी सलाह की पालना करनी चाहिए।

• कोरोना कविता •

बहुत तबाही मचाली तूने, अब हार होगी कोरोना तेरी।
कोरोना को मिटा डालेगी, 2 गज की आपसी दूरी।
मास्क लगाकर हम निकलेंगे, नहीं चलेगी कोरोना तेरी।

लॉकडाउन अब खत्म होगा, चलो काम की करो तैयारी।
बिना काम नहीं घर से निकलेंगे, यह कसम है हमारी।
खूब परिश्रम करेंगे हम, समृद्ध होगी धरती हमारी।

नर्सरी में तैयार पौधे जैसे सहजन, कच्छनार, अमरुद, नीबु, अमलता, सीताफल, जामुन, कटहल, बांस आदि कि खरीद के लिए पौधे निम्न किसानो से सम्पर्क करे।

विरेन्द्र डिन्डोर
फो नम्बर - 9610582079

जेमली देवी
फो नम्बर - 6375189092

अमरसिंह डामोर
फो नम्बर - 9589697258

सब्बु डामोर
फो नम्बर - 9828462359

सामुदायिक रेडियो, वागड़ रेडियो 90.8 FM (विषय सूची)

क्र.स.	कार्यक्रम का समय	कार्यक्रम के नाम	कार्यक्रम के बारे में	लाभान्वित
1	6 AM TO 6:30 AM	संकेत ध्वनी / आराधना	भक्तिमय आदर्शो के साथ भक्तिमय गीत	समुदाय
2	6:30 AM TO 7:00 AM	खेतिवाड़ी	खेतिवाड़ी कार्यक्रम के माध्यम से परम्परागत अनाज, परम्परागत खेती, जैविक फसल चक्र ,जैविक कीटनाशी दवा, पशुपालन, बीज संरक्षण, सिंचाई, मिट्टी परीक्षण आदि से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी एवं विषय विशेषज्ञो द्वारा किसान भाइयो का जुडाव व महिलाओं की चर्चा ।	खेती पर आधारित परिवार, पुरुष, महिलाए बच्चे
3	7:00 AM TO 7:30 AM	सच्चा बचपन	कार्यक्रम सच्चा बचपन के माध्यम से बच्चो की शिक्षा, खेल, स्वास्थ्य, पोषण, अधिकार, बच्चो के लिए अनमोल बाते, कविताएं, कहानियाँ से जुडे कार्यक्रम ।	बच्चे एवं माता पिता
4	7:30 AM TO 8:00 AM	युवाओं की आवाज	कम पूंजी में अधिक मुनाफा, विज्ञान की बाते, शिक्षा, रोजगार, आधुनिकता, खेल व् युवाओं के कोशल से जुडे हेतु कार्यक्रम ।	युवा साथी
5	8:00 AM TO 8:30 AM	सच्चा स्वराज	अधिकार, कानून / संविधान, पंचायत व मनरेगा से जुडे कार्य व बाते, सच्चा स्वराज की बाते	ग्रामीण परिवार (पुरुष महिलाए, बुजुर्ग, बच्चे, समस्त सदस्य)
6	8:30 AM TO 9:00 AM	लोकसंगीत	राजस्थानी गीतों पर आधारित कार्यक्रम	समुदाय
7	9:00 AM TO 9:30 AM	हमारा स्वास्थ्य (सोम, मंगल,गुरु,शुक्र)	बीमारी, पोषण/परम्परागत अनाज, घरेलु ईलाज	समुदाय (महिलाये, पुरुष, बच्चे व बुजुर्ग)
8	9:00 AM TO 9:15 AM	समस्या समाधान (बुध, शनि)	हमारे जीवन से जुडी दैनिक समस्या और उसके समाधान	समुदाय
9	9:15 AM TO 9:30 AM	हमारी योजनायें	सम्पूर्ण योजनाओं का लाभ	समुदाय
10	9:30 AM TO 10:00 AM	फिल्मसंगीत	फ़िल्मी गीतों पर आधारित कार्यक्रम	समुदाय
11	10:00 AM TO 11:00 AM	हमारी बात आपके साथ	सीधा प्रसारण कार्यक्रम जिसमे विशेष दिवस एवं विषय विशेषज्ञो के साथ चर्चा	समुदाय
12	11:00 AM TO 1:00 PM	आपकी फ़रमाइश	फ़रमाइश आधारित नगमे जिसके माध्यम से श्रोताओ की पसंद के गीतों का सिलसिला	समुदाय

हमारा आपसे आग्रह है की आप वागड़ रेडियो 90.8 FM से व इसके द्वारा प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों से जुड़ना चाहते है तो आप हमें सम्पर्क कर सकते है हमारे इस पते एवं फोन नम्बर के द्वारा ....

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें-
वागड रेडियों 90.8 FM, मुकाम-पोस्ट कुपड़ा, वाग्धारा केम्पस, बाँसवाड़ा (राज.) 327001
फोन नम्बर है - **9460051234** ई-मेल आईडी -radio@vaagdhara.org

यह "वातें वाग्धारा नी" केवल आंतरिक प्रसारण है ।

मार्गदर्शक : दिपक शर्मा, गगन सेठी, नरेन्द्र कुमार | मुख्य संकलक : परमेश पाटीदार | सहसंकलक : जागृती भट्ट | सहायक : कांतीलाल यादव